वर्ष 23 | अंक 11 | जून, 2022

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

ISSN No. 2582-4546

₹ 30

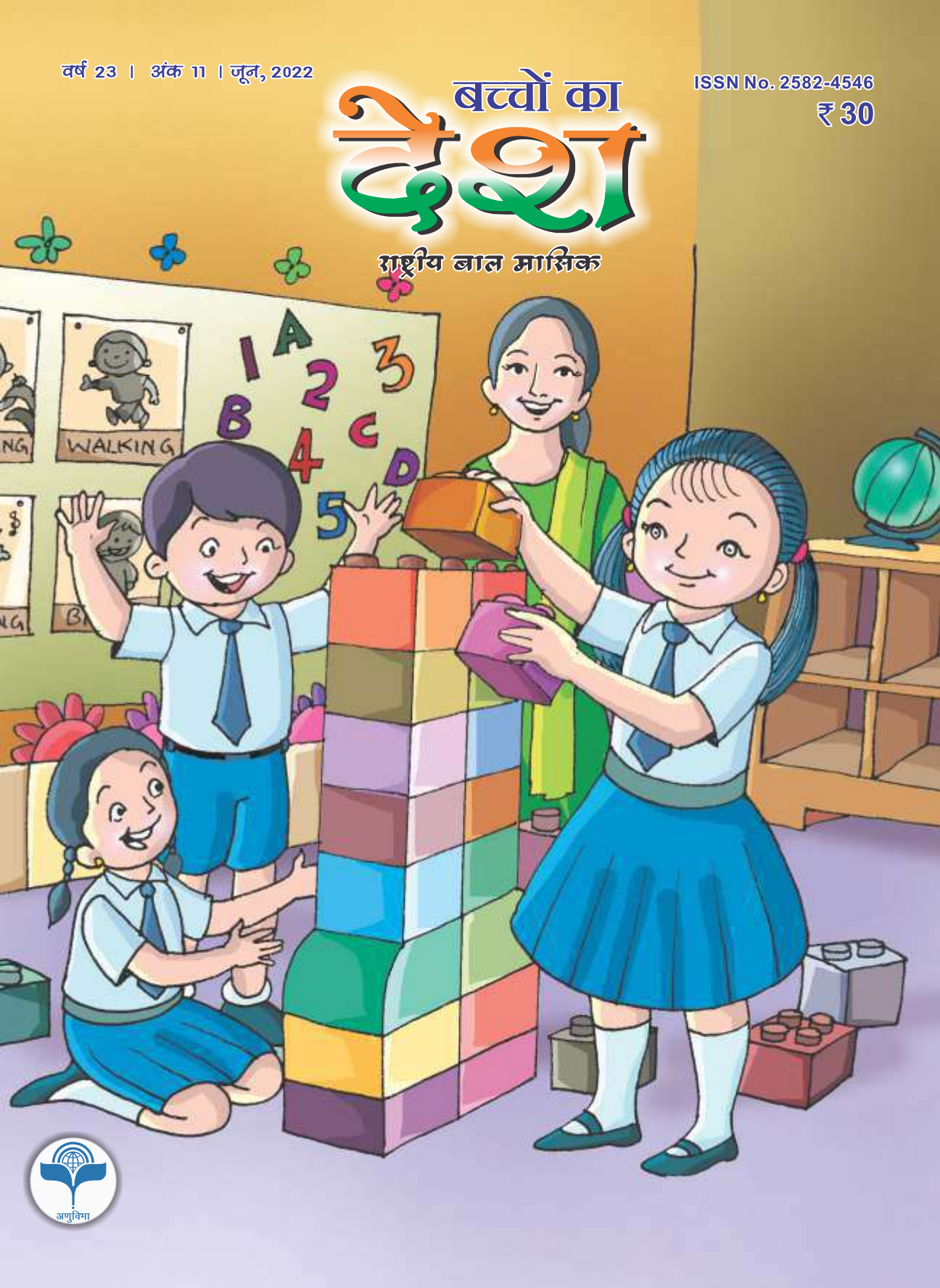

अणुविभा

क्या आप जानते हो ?

गोल्डन ब्रिज, वियतनाम

वियतनाम का गोल्डन ब्रिज एक सपनों की दुनिया जैसा है। इस पैदल पुल को खूबसूरत बनाते हैं दो पत्थर के बने हाथ जो पुल को पकड़े हुए हैं। इस अनूठी कृति को 2016 में दर्शकों के लिए खोला गया है। यह पुल 150 मीटर लम्बा है। इस पुल से प्रकृति का दृश्य बड़ा मनभावन लगता है।

स्काई ब्रिज, रूस

दक्षिण–पश्चिमी रूस में सोची के पास स्काई ब्रिज, एक अनूठा अनुभव कराने वाला पुल है जो लगभग एक किलोमीटर तक फैला है। इस पुल पर एक समय में लगभग 30 हजार लोग चल सकते हैं। इसे ट्रोल वायर भी कहते हैं। पर्यटक इस ब्रिज पर बंजी जंपिंग भी करते हैं।

ट्रीफ्ट ब्रिज, स्विट्ज़रलैंड

ट्रीफ्ट ब्रिज सबसे लम्बे और सबसे ऊँचे सस्पेंशन पुलों में से एक है जिसे 2004 में हाइकर्स के लिए बनाया गया था। ऐल्प्स की पहाड़ियों में इसे एक झोपड़ी से जोड़ने के लिए बनाया गया जहाँ पहुँचने का कोई रास्ता नहीं था। यह पुल 100 मीटर ऊँचा और 170 मीटर लम्बा है।

कहाँ क्या?

अंक विशेष

पी.वी. नरसिम्हा राव	: कीर्ति श्रीवास्तव	– 11
होनहार बच्चे : संस्कृति जैन	: शिखर चन्द जैन	– 14
फादर्स डे : पिता को समझो जरा	: गोपाल माहेश्वरी	– 26
मेरा भारत महान	: डॉ. प्रकाशचन्द्र गुप्ता	– 28
पारदर्शी शरीर वाले अनोखे जीव	: डॉ. विनोद गुप्ता	– 29
तीरंदाजी	: अनिल जायसवाल	– 38

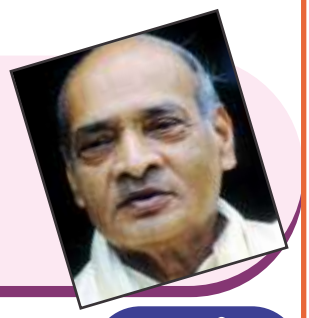

कहानी

लगा निशाना पत्थर से	: रजनीकान्त शुक्ल	– 07
पंछी एक डाल के	: गोविन्द शर्मा	– 09
अजब–गजब का पौधारोपण	: राजेन्द्र प्रसाद श्रीवास्तव	– 15
मैं हूँ पिंक परी	: डॉ. शील कौशिक	– 19
सत्य की राह	: सावित्री चौधरी	– 22
सोच अपनी–अपनी	: डॉ. चेतना उपाध्याय	– 23
रिटर्न गिफ्ट	: सुधा आदेश	– 31
अनोखा जन्मदिन	: डॉ. अलका जैन 'आराधना'	– 34
सब्र का इनाम	: पूनम पांडे	– 36
शैतानी छूट गई	: डॉ. कुसुम रानी नैथानी	– 39

कविता-गीत

जू में जिराफ	: गौरव वाजपेयी 'स्वप्निल'	– 06
पेड़ नहीं काटें	: डॉ. विष्णु शास्त्री 'सरल'	– 10
गरम महीना जून का	: डॉ. रोहिताश्व अस्थाना	– 10
गर्मी आई	: जाल अंसारी	– 10
परमवीर करम सिंह	: डॉ. वेद मित्र शुक्ल	– 13
मोती जैसे दाँत चमकते	: डॉ. राकेश चक्र	– 18
अगर न होता हमको पढ़ना	: डॉ. वीरेन्द्र कुमार भारद्वाज	– 18
जग में हँसते–गाते बच्चे	: दिनेश विजयवर्गीय	– 30

विविधा

Count the numbers : धरम पाल मिन्टू – 12	दिमागी कसरत : प्रकाश तातेड़ – 21
बूझो तो जानें : डॉ. सुरेन्द्र दत्त सेमल्टी – 16	बुद्धि की परख : चाँद मोहम्मद घोसी – 21
वर्ग पहेली : राधा पालीवाल – 17	Whatsapp Story – 46

स्तम्भ

क्या आप जानते हो ? – 2, सम्पादक की पाती –05, महाप्रज्ञ की कथाएँ– 06, जीवन विज्ञान के प्रयोग–08, आओ पढ़ें : नई किताबें – 25, प्रेरक वचन, अन्तर ढूँढ़िये – 30, सुडोकू–32, दस सवाल : दस जवाब– 33, पढ़ो और जानो, उत्तरमाला – 41, कलम और कूँची– 42, नन्हा अखबार – 44, जन्मदिन की बधाई – 46, चित्र कथा–47, किड्स कॉर्नर– 50, बच्चों का क्लब – 51

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

वर्ष – 23 अंक –11 जून, 2022

प्रकाशक
अणुव्रत विश्व भारती
सहयोगी संस्थान
भागीरथी सेवा प्रन्यास

सम्पादक | संचय जैन 98290 52452
सह सम्पादक | प्रकाश तातेड़ 93515 52651
प्रबन्ध सम्पादक | निर्मल राँका, पंचशील जैन
कार्यालय | चन्द्रशेखर देराश्री
ग्राफिक डिजायन | गजेन्द्र दाहिमा
चित्रांकन | वेणु वरियाथ

सम्पादकीय कार्यालय

अणुव्रत विश्व भारती (अणुविभा)
चिल्ड्रन'स पीस पैलेस
पोस्ट बॉक्स सं. 28
राजसमन्द – 313324 (राजस्थान)
bachchon_ka_desh@yahoo.co.in
9414343100

सदस्यता शुल्क

एक प्रति	: 30 रु.
वार्षिक	: 300 रु.
त्रैवार्षिक	: 800 रु.
पंचवार्षिक	: 1200 रु.
दस वर्ष	: 2400 रु.
पंद्रह वर्ष	: 7000 रु.

(कोरियर द्वारा 300 रु अतिरिक्त प्रतिवर्ष)
विदेश के लिए वार्षिक शुल्क $ 20

प्रकाशक मुद्रक व सम्पादक

संचय जैन द्वारा अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी, राजसमन्द के लिए प्लेजर डिजिटल प्रेस, 10, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर (राज.) से मुद्रित एवं चिल्ड्रन'स पीस पैलेस, राजसमन्द से प्रकाशित

ISSN No. 2582-4546

सदस्यता शुल्क भेजने के तीन तरीके -

नकद / चैक / ऑनलाइन	UPI	RAZOR PAY
ANUVRAT VISHWA BHARTI SOCIETY IDBI Bank BRANCH Rajsamand A/c No. : 104104000046914 IFSC : IBKL0000104		https://rzp.io/l/uGTBPsrRx

Send Payment Information On Whatsapp No. 9116634513

'बच्चों का देश' मासिक में प्रकाशित रचना व चित्र सहित समस्त सामग्री के प्रकाशन का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लिखित अनुमति प्राप्त कर इनका उपयोग किया जा सकता है। समस्त कानूनी मामलों का न्याय क्षेत्र केवल राजसमन्द होगा।

www.anuvibha.org www.bachchonkadesh.com www.facebook.com/bkdpage

सम्पादक की पाती

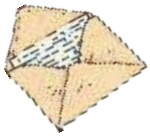

प्यारे बच्चो,

पिछले महीने की बात है, श्वेता जब स्कूल से घर लौटी तो बेसुध-सी माँ की गोद में लेट गई। माँ घर का काम निपटा कर कूलर के सामने आकर बैठी ही थी। गर्मी बेहाल कर रही थी। पारा 48 डिग्री छू रहा था। गोद में ही लेटे-लेटे श्वेता बड़बड़ाई – ''माँ, आज गर्मी के कारण एक बच्चा स्कूल में बेहोश होकर गिर गया... गर्मी अभी और बढ़ने वाली है... अगले तीन दिनों के लिए स्कूल में छुट्टी रहेगी...।''

माँ श्वेता का सिर सहलाने लगी। चिन्ता की लकीरें उनके ललाट पर साफ दिखाई दे रही थी। वो कुछ बोलती उससे पहले ही श्वेता पूछ बैठी – ''माँ, क्या सच में 'ग्लोबल वार्मिंग' हो रही है? इतनी गर्मी लोग कैसे सहन कर पाएँगे? क्या पृथ्वी का तापमान इतना बढ़ जाएगा कि कई देश समुद्र के पानी में समा जाएँगे?''

माँ बोली – ''बेटा, सुना तो है कि पर्यावरण इसी तरह बिगड़ता रहा तो इस सदी के खतम होते-होते तापमान 5°C तक बढ़ जाएगा। मौसम का स्वभाव बदलता जा रहा है। बड़े देशों के बड़े नेता बड़े-बड़े सम्मेलन करते हैं लेकिन स्थिति बिगड़ती ही जा रही है।''

श्वेता कुछ सोचते हुए बोली – ''माँ, मैंने एक बुक में पढ़ा था कि हमारे शरीर पर भी वो ही नियम लागू होते हैं जो नेचर पर और यूनिवर्स पर लागू होते हैं। हमारा शरीर भी उन्हीं चीजों से बना है जिनसे हमारी पृथ्वी और यूनिवर्स बना है।''

बेटी की बात से सहमति जताते हुए माँ बोली – ''कहते हैं दुनिया का हर प्राणी पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश से बना है। इससे हमारे शरीर का प्रकृति से सीधा जुड़ाव समझा जा सकता है। यह बहुत गहरा विज्ञान है। अब, इसी को ले लो, हमारी पृथ्वी पर लगभग 70 प्रतिशत भाग पानी है। हमारा शरीर भी इससे कुछ अलग नहीं है। शरीर में भी 50-60 प्रतिशत पानी ही होता है। इसीलिए तो मैं तुम्हें अकसर पानी पीने के लिए याद दिलाती रहती हूँ। बच्चों को दिनभर में 7-8 ग्लास पानी जरूर पीना चाहिए।''

''हाँ माँ, बहुत प्यास लगी है। मैं पानी पीकर आती हूँ।'' – कह कर श्वेता उठ खड़ी हुई। लेकिन प्रकृति, पर्यावरण और जीवन को लेकर कई प्रश्न उसके मन में अब भी उठ रहे थे और उसने इस बारे में अधिक से अधिक जानने और कुछ करने का मन में ठान लिया था।

प्यारे बच्चो, आपको और हम सबको इस बारे में निरन्तर सोचना है और प्रकृति के साथ अपने सम्बन्धों को मजबूत करने के लिए अपने-अपने स्तर पर जो भी सम्भव हो, प्रयास करना है।

आपका ही,

संचय

महाप्रज्ञ की कथाएँ

संकल्प शक्ति

एक शिष्य ने गुरु से पूछा– ''गुरुदेव! यह चट्टान इतनी विशाल और मजबूत है। क्या इस पर किसी का शासन है?'' गुरु ने कहा– ''हाँ, इस पर शासन है लोहे के हथौड़े का। जब हथौड़ा और छेनी चलते हैं तब चट्टान चूर–चूर हो जाती है।'' ''गुरुदेव! लोहा इतना मजबूत है तो क्या उस पर भी किसी का शासन है?'' गुरु ने कहा– ''हाँ, अग्नि उस पर शासन करती है। लोहा अग्नि से पिघल जाता है और वह पानी बन जाता है।''

''गुरुदेव! आग इतनी शक्तिशाली है तो उस पर भी किसी का शासन है?'' ''हाँ, पानी अग्नि पर शासन करता है। जलती हुई आग को पानी बुझा देता है।'' ''पानी पर किसका शासन है?'' ''वायु पानी पर शासन करती है। आकाश में कितनी ही घनघोर घटाएँ उमड़ी हो, हवा उसको एक क्षण में बिखेर देती है।'' ''वायु पर किसका शासन है?'' ''वायु पर हमारी संकल्प–शक्ति का शासन है। संकल्प–शक्ति बहुत बड़ी शक्ति है।'' गुरुदेव ने कहा।

कथाबोध– प्रकृति में वस्तुएँ परस्पर बलवान होती है पर संकल्प सबसे अधिक शक्तिशाली होता है।

पद्य कथा

जू में जिराफ

खम्भे जैसी गर्दन वाला
जू में मुझको मिला जिराफ
मैंने पूछा–"हे पशु प्यारे!
भला कहाँ से आए आप?

ये जो चित्ती पड़ी देह पर
ये किससे बनवाई हैं?"
बोला वह–"ओ चिंटू बेटा!
ये तो बनी–बनाई हैं।

मैं लम्बी–सी गर्दन वाला
एक अजब चौपाया हूँ।
तुमसे मिलने बड़ी दूर से
अफ्रीका से आया हूँ।।

तुम्हें बताऊँ पूरे दिन मैं
इक घंटे ही सोता हूँ।
गर्दन के सँग जीभ और
पैरों से लम्बा होता हूँ।।"

मैंने पूछा–"मुझे बताओ
आप भला क्या खाते हो?
भीमकाय काया से अपनी
बोलो किसे डराते हो ?"

वह बोला– "मैं शाकाहारी
फल औ' पत्ते खाता हूँ।
पशुओं का मैं मांस न खाता
न ही उन्हें सताता हूँ।।"

मैंने उससे हाथ मिलाया
कहकर–"अजब–गजब हो आप।
छह फीट लम्बे पैर आपके
लगता हाथी के हो बाप।।"

गौरव वाजपेयी 'स्वप्निल'
बलरामपुर (उत्तर प्रदेश)

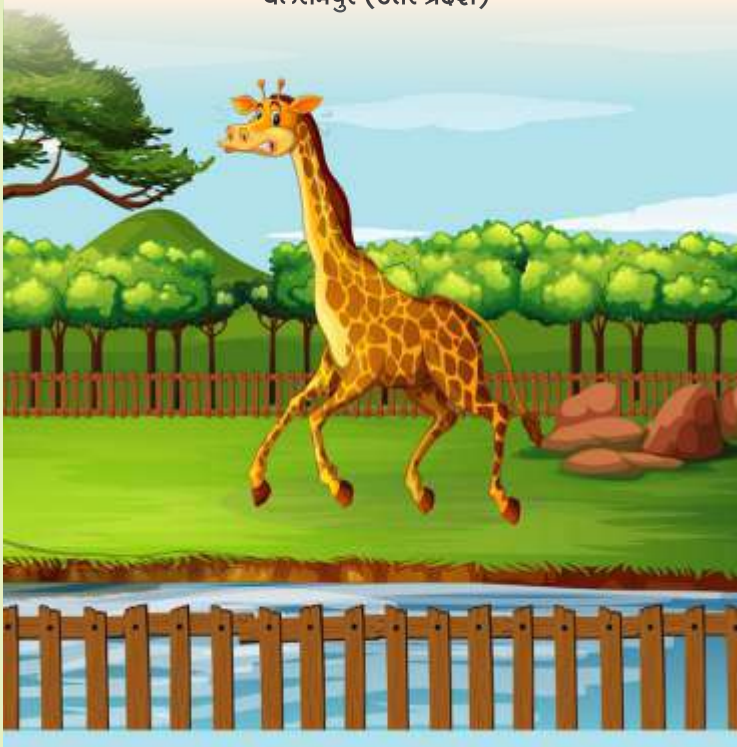

लगा निशाना पत्थर से

ग्यारह साल का गुरजीवन सिंह के पाँच भाई बहन थे। उसके पिता श्रवनसिंह की कुछ साल पहले मृत्यु हो चुकी थी। माँ जसबीर कौर पर सारे परिवार की जिम्मेदारी आ पड़ी। वे लोग दूसरों के खेतों को बटाई पर ले लेते फिर लगभग पूरा परिवार सारे साल उसमें लगा रहता।

10 फरवरी 2010 को एक ऐसी घटना घट गई जिसने गुरजीवन सिंह के जीवन में बदलाव ला दिया। उसके पड़ोस में सतलज ग्रामीण बैंक का दफ्तर था। अभी वह उस बैंक के सामने पहुँचा था कि अचानक बैंक के अन्दर से खतरे के सायरन की आवाज आनी शुरू हो गई। अभी वह कुछ समझ पाता कि तभी बैंक के अन्दर से काफी जोर का शोर सुनाई देने लगा। वह सतर्क हो चुका था। उसने समझ लिया कि अन्दर जरूर कोई गड़बड़ हुई है।

तभी उसने देखा कि बैंक के अन्दर से दो तीन लोग बाहर निकलकर भाग रहे हैं। उनके पीछे भी कुछ लोग शोर मचाते हुए दौड़ रहे हैं। आगे भागने वालों के हाथों में हथियार और पिस्तौल थी। गुरजीवन समझ गया कि जरूर आगे भागने वाले बदमाश हैं। जिनका पीछा निहत्थे लोग कर रहे हैं। भागने का प्रयास करने वाले वहाँ पर खड़ी एक बाइक के करीब पहुँचे और वे अपनी जेब में चाबी ढूँढ़ने की कोशिश कर रहे थे। मगर हड़बड़ी में उन्हें चाबी नहीं मिल रही थी।

गुरजीवन जहाँ पर खड़ा था वहाँ पर संयोग से ईंट पत्थरों का एक ढेर पड़ा हुआ था। गुरजीवन ने तुरन्त उन बदमाशों को रोकने का उपाय सोच लिया। उसने ढेर से उठा उठाकर ईंटों–पत्थरों को उन पर बरसाना शुरू कर दिया। लगातार होने वाली इन ईंटों की बारिश से वे बदमाश सकते में आ गए। उन्होंने जब एक छोटे से लड़के को इस तरह की हरकत करते देखा तो उन्होंने गुरजीवन को धमकाने की कोशिश की। मगर गुरजीवन ने रुकने के बजाय अपनी पत्थर फेंकने की रफ्तार बढ़ा दी। अब उन्होंने गुरजीवन पर हाथ में पकड़ी पिस्तौल से फायर झोंक दिया। मगर उनका यह निशाना चूक गया। बैंक में से उनके पीछे भागने वाले लोग उन बदमाशों के हाथ में पिस्तौल देखकर पहले ही अपने कदमों को रोक चुके थे। गुरजीवन का निशाना चूक नहीं रहा था और उसके फेंके ईंट पत्थरों से वे बदमाश घायल भी हो रहे थे। चाबी के चक्कर में वे मोटर साइकिल से भाग नहीं पा रहे थे।

लगातार होने वाले गुरजीवन के इन हमलों ने बदमाशों की हवा खराब कर दी थी। तभी एक पत्थर ने उनके हाथ की पिस्तौल को दूर गिरा दिया। इतना मौका बहुत था। बैंक के अन्दर यह तमाशा देख रही भीड़ एक साथ होकर इन बदमाशों पर टूट पड़ी। फिर सबने मिलकर उन तीनों बदमाशों पर काबू पा लिया। पुलिस को खबर की गई और उन तीनों बदमाशों को हवालात में बन्द कर दिया गया।

हुआ यह था कि वे तीनों हथियारबन्द लुटेरे उस ग्रामीण बैंक में लूट के इरादे से घुसे थे। उन्होंने तलवार से हमला कर हथियारबन्द गार्ड की बंदूक छीन ली थी। फिर बैंक के अधिकारियों और ग्राहकों को भी अपने कब्जे में ले लिया था। इसी बीच मौका पाकर बैंक मैनेजर ने खतरे का सायरन बजा दिया। जिससे बदमाश घबरा गए और लोग जमा होकर उन्हें

देखें पृष्ठ 13...

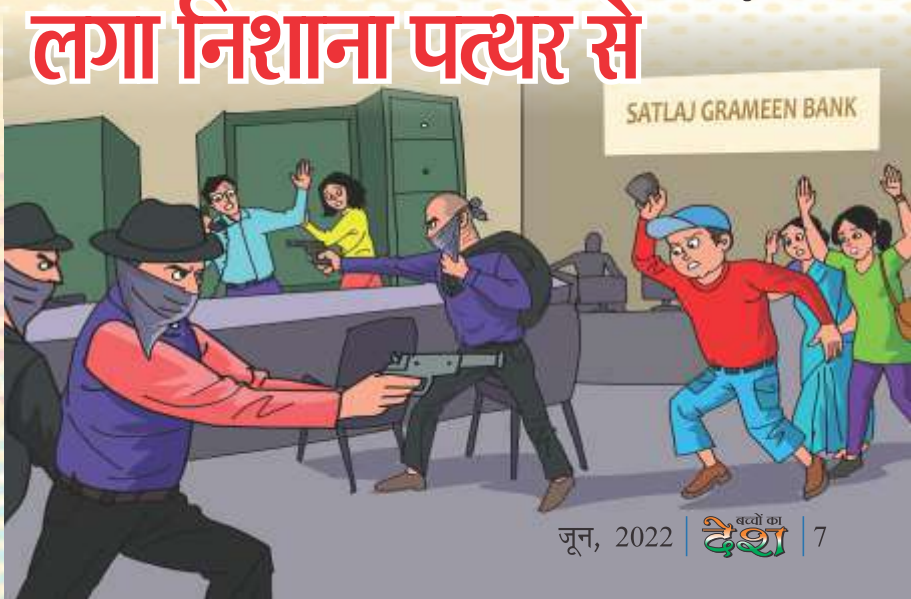

जीवन विज्ञान के प्रयोग

मुद्राएँ

पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश ये पाँच तत्त्व अगर बाहर हैं तो ये पाँचों शरीर के भीतर भी हैं। ये तत्त्व हमारे शरीर में ठीक मात्रा में नहीं रहते हैं तो हम अस्वस्थ हो जाते हैं। इनके सन्तुलन को ठीक करने के साधन हमारे पास मौजूद हैं। जैसे पंखा या बल्ब का स्विच दबाने पर पंखा या बल्ब चालू व बन्द हो जाते हैं, उसी प्रकार शरीर से पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश को नियन्त्रित करने के भी स्विच बने हुए हैं। वे इस प्रकार हैं–

1. कनिष्ठा – जल
2. अनामिका – पृथ्वी
3. मध्यमा – आकाश या शून्य
4 तर्जनी – वायु
5. अँगूठा – अग्नि

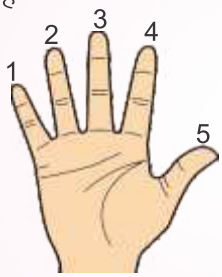

जब ये तत्व हमारे शरीर में असन्तुलित होने लगते हैं तब शरीर में अनेक रोग जन्म लेते हैं। हाथों की अँगुलियाँ जब एक दूसरे से मिलती हैं तो अनेक ऐसी मुद्राएँ बनती हैं जो इस असन्तुलन को मिटाने का सामर्थ्य रखती है।

1. ज्ञान मुद्रा– यह मुद्रा अँगूठे के ऊपरी सिरे और तर्जनी अँगुली के ऊपरी भाग को मिलाकर हल्का दबाव देकर बनायी जाती है। यह अग्नि और वायु तत्त्व का मेल है। इससे स्मृति तेज होती है। मन स्थिर और शान्त होता है। मन संयम का यह अच्छा साधन है। इसलिए ध्यान की यह मुद्रा प्रसिद्ध है। बुद्ध और महावीर की प्रतिमाओं में इस मुद्रा को देखा जा सकता है।

2. वायु मुद्रा– हमारे शरीर में श्वसन के कारण वायु का बहुत महत्त्व है। वायु को नियन्त्रित करना वायु मुद्रा का काम है। पहली अँगुली यानी तर्जनी को अँगूठे की जड़ में स्पर्श कराने से वायु मुद्रा बनती है। इससे अग्नि तथा वायु कम हो जाती है। गठिया, रीढ़ की हड्डी में दर्द, शरीर–कंपन आदि में इस मुद्रा से लाभ होता है। इस मुद्रा में श्वास की गति, इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना नाड़ियों को भी नियन्त्रित किया जाता है।

3. शून्य मुद्रा– शरीर में शून्य के रूप में आकाश तत्त्व है। जब यह बढ़ता है तब बहरापन, सिरदर्द, विचार शून्यता और सनसनाहट की शिकायत हो जाती है। बीच की अँगुली (मध्यमा) को अँगूठे की जड़ में लगाने से शून्य मुद्रा बनती है। इससे बहरापन आदि शिकायतें दूर होती है।

4. प्राण मुद्रा– शरीर की शक्ति का आधार प्राण है। प्राण ऊर्जा कम हो जाने से आदमी अपने आपको शक्तिहीन महसूस करता है। प्राण मुद्रा के अभ्यास से शरीर में शक्ति बढ़ाई जा सकती है। अँगूठे से अनामिका और कनिष्ठा को स्पर्श करने से यह मुद्रा बनती है।

5. पृथ्वी मुद्रा– पृथ्वी तत्त्व से शरीर के भार का सम्बन्ध है। जब पृथ्वी तत्त्व बढ़ जाता है तब शरीर में भारीपन महसूस होने लगता है। पैर लड़खड़ाने लगते हैं। इसके लिए पृथ्वी मुद्रा का अभ्यास करना चाहिए। इसमें अनामिका को अँगूठे की जड़ से लगाना होता है।

पंछी एक डाल के

पेड़ पर पक्षियों की चहचहाट कुछ कम थी। कुछ अपने लिए तो कुछ अपने छोटे बच्चों के लिए चुग्गा लाने गये हुए थे। हाँ, पेड़ पर एक कौआ बैठा था। जैसी कि कौए की आदत होती है, वह कभी एक जगह टिककर नहीं बैठता। कभी इस डाल पर तो कभी उस पर। अचानक वह जोरों से काँव–काँव करने लगा। एक डाल पर मंडराने लगा और एक जगह अपनी चोंच भी मारने लगा क्योंकि उसे वहाँ एक साँप दिखाई दे गया था। उसकी जोरदार काँव–काँव से पेड़ पर बैठे इक्का–दुक्का पक्षी भी घबराकर इधर–उधर उड़ने लगे। साँप भी घबरा गया और वापस मुड़ गया। यदि उस वक्त कौआ उसे देखकर काँव–काँव न करता तो वह चिड़िया के घोंसले तक पहुँच ही जाता। चिड़िया उस समय घोंसलों में नही थी। वह चिड़िया के अंडों या छोटे चूजों को खा जाता।

चिड़िया का परिवार तो बच गया, पर कौव्वे का इस तरह चिल्लाना कोटर में बैठे उल्लू को अखर गया। वह धीरे–धीरे अपने कोटर से बाहर आया और कौव्वे की तरफ मुँह कर बोला– ''कैसे पंछी हो तुम? आराम से सोने भी नहीं देते। जिसे तुम रात कहते हो, वह हमारा दिन होता है, हमें दाना पानी उस समय ढूँढ़ना पड़ता है। इस वक्त तो आराम करने दो। माना कि तुम कौव्वे सदा से ही हम उल्लूओं के दुश्मन होते हो। पर मैंने तो तुम्हारा कभी भी कुछ नहीं बिगाड़ा।''

कौव्वा बोला– ''मैंने तुम्हारे साथ कभी दुश्मनी वाली बात नहीं की। जरा सी तुम्हारी नींद क्या खुल गई, लड़ने चले आए। इस समय तुम्हें कुछ दिखाई नहीं दे रहा, इसलिए तुम्हें नहीं पता चिड़िया के घोंसले में क्या होने वाला था?'' ''अच्छा, मुझे ज्यादा मत सिखा, मुझे सोने दे। अपनी काँव–काँव बन्द रखना।''

इतना कहकर उल्लू अपने कोटर की तरफ जाने वाला ही था कि कौव्वे ने पहले से ही ज्यादा जोरों से काँव–काँव करना शुरू कर दिया और चिल्लाकर बोला– ''अबे उल्लू, तू मुझसे बहस कर रहा है। उधर तेरे कोटर तक वही साँप पहुँच गया है।'' इतना सुनना था कि उल्लू ने जोर से चीख मारी। उल्लू की चीख और कौव्वे की काँव–काँव से घबराकर साँप फिर वापस चला गया। उल्लू के

देखें पृष्ठ 13...

पेड़ नहीं काटें

डॉ. विष्णु शास्त्री 'सरल'
भैरवां, चम्पावत (उत्तराखण्ड)

पेड़ हमारे जीवन साथी
हैं सारे उपयोगी,
उन्हें लगाकर करें सुरक्षा
तब धरती खुश होगी।

प्राणवायु मिलती पेड़ों से
फल स्वादिष्ट रसीले,
शीतल छाया, पानी, लकड़ी
कोमल फूल सजीले।

पक्षी निज घोंसले उन्हीं पर
निर्भय सदा बनाते ,
'चीं–चीं–चूं–चूं' का मीठा स्वर
हमको सहज सुनाते।

पेड़ों से ही तो रहती है
धरती पर हरियाली,
हर प्रकार से देते हैं वे
सबको नित खुशहाली।

पर्यावरण शुद्ध रखने को
होंगे पेड़ बचाने,
कभी आपदा किसी तरह की
पाए पास न आने।

कभी भूलकर भी जीवन में
पेड़ नहीं हम काटें,
मिले हुए पेड़ों के सुख को
सदा परस्पर बाँटें।

गर्मी आई

गरम महीना जून का
काम नहीं अब ऊन का
दिन भर तपती धूप है
सूरज का क्या रूप है?

बढ़ती जाती प्यास है
पानी की बस आस है
बहे पसीना तेज है
भीगी फाइल मेज है।

दिन लम्बे शैतान है
रोते गरम मकान हैं
हवा हुई बीमार है
उसको तेज बुखार है।

छुट्टी के दिन आ गए
सबके मन को भा गए।
कहना अफलातून का
मौसम देहरादून का।

डॉ. रोहिताश्व अस्थाना
हरदोई (उत्तर प्रदेश)

सर्दी की अब हुई विदाई
गर्मी आई, गर्मी आई।

चिलचिलाती धूप से भइया
तप रहे सभी फूस मढइया।
मौसम ने ली अंगड़ाई
गर्मी आई, गर्मी आई।

छोड़ रहा है देह पसीना
अगन भरा है जून महीना।
अब पंखों की बारी आई
गर्मी आई, गर्मी आई।

रात में मच्छर खूब सताएँ
नयनों से निन्दिया ले जाएँ।
ले ले करवट रात बिताई
गर्मी आई, गर्मी आई।

गरम–गरम लू चल रही है
अगन धरा भी उगल रही है।
घर में चैन न बाहर भाई
गर्मी आई, गर्मी आई।

जाल अंसारी
पीलीभीत (उत्तर प्रदेश)

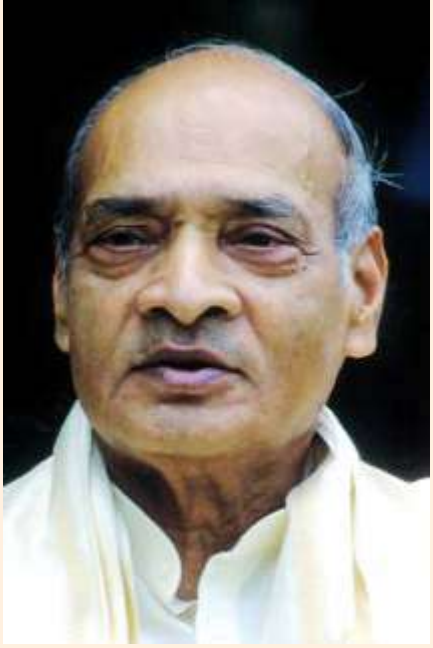

कुशल राजनेता, साहित्य प्रेमी

पी वी नरसिम्हा राव

भारत के दसवें प्रधानमंत्री श्री पी.वी. नरसिम्हा राव ने 1991–1996 के बीच इस पद पर कारगर भूमिका निभाई थी। वह एक लोकप्रिय व कर्मठ नेता रहे। वह राजनेता के साथ साहित्य प्रेमी भी थे। उसके साथ–साथ उन्हें संगीत और कला में भी विशेष रुचि थी। वे विभिन्न भाषाओं के ज्ञाता थे। उन्हें भारतीय भाषाओं के साथ स्पेनिश एवं फ्रांसिसी भाषा का भी अच्छा ज्ञान था।

जीवन परिचय

श्री पी.वी. नरसिम्हा राव का पूरा नाम पामुलापार्ती वेंकट नरसिम्हा राव था। उनका जन्म करीम नगर गाँव, हैदराबाद में 28 जून 1921 को हुआ था। आपकी शिक्षा उस्मानिया विश्वविद्यालय से प्रारम्भ हुई एवं उच्चतम शिक्षा आपने बॉम्बे (मुम्बई) और नागपुर से प्राप्त की। आपने लॉ में मास्टर डिग्री प्राप्त की थी। पी.वी. नरसिम्हा राव का विवाह सत्याम्मा से हुआ। उनके तीन बेटे एवं पाँच बेटियाँ थी।

भारतीय आर्थिक सुधारों के जनक

पी.वी. नरसिम्हा राव पेशे से वकील एवं कृषि विशेषज्ञ थे। राजनीतिज्ञ के रूप में आपने अपनी एक अलग पहचान बनाई। राजनीति में आने के बाद उन्होंने विभिन्न महत्त्वपूर्ण विभागों का कार्यभार सँभाला। आपने बहुत से आर्थिक परिवर्तन किये जिस कारण आपको 'भारतीय आर्थिक सुधारों का जनक' भी कहा जाता है।

राजनीति के क्षेत्र में इन्होंने 1962 से 64 तक आंध्र प्रदेश सरकार में कानून एवं सूचना मंत्री के पद पर कार्य किया। 1964 से 67 तक कानून एवं विधि मंत्री एवं 1967 में स्वास्थ्य एवं चिकित्सा मंत्री रहे। उसके बाद 1968 से 1971 तक शिक्षा मंत्री भी रहे। तदोपरांत उन्होंने 1971 से 73 तक आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री के पद पर कार्य किया। उन्होंने राजनीतिक मामलों एवं संबद्ध विषयों पर संयुक्त राज्य अमेरिका और पश्चिम जर्मनी के विश्वविद्यालयों में व्याख्यान दिया। श्री राव ने अंतरराष्ट्रीय आर्थिक मुद्दों में व्यक्तिगत रूप से गहरी रुचि दिखाई थी। व्यक्तिगत रूप से मई 1981 में कराकास में ईसीडीसी पर जी–77 के सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया।

भारतीय संस्कृति से लगाव

पी.वी. नरसिम्हा राव को भारतीय संस्कृति से काफी लगाव था। इनको एक साथ 17 भाषा बोलने में महारथ हासिल थी। मातृभाषा तेलगू होने के बाद भी मराठी भाषा में भी इनकी अच्छी पकड़ थी। संगीत, सिनेमा एवं नाट्यशाला में रुचि रखते थे। भारतीय दर्शन एवं संस्कृति, कथा साहित्य एवं राजनीतिक टिप्पणी लिखने, भाषाएँ सीखने, तेलगू एवं हिंदी में कविताएँ लिखने एवं साहित्य में उनकी विशेष रुचि थी। उन्होंने स्वर्गीय श्री विश्वनाथ सत्यनारायण के प्रसिद्ध तेलगू उपन्यास 'वेई पदागालू' के हिंदी अनुवाद 'सहस्रफन' एवं केन्द्रीय साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित स्वर्गीय श्री हरि नारायण आप्टे के प्रसिद्ध मराठी उपन्यास 'पान लक्षत कोन घेटो' के तेलगू अनुवाद 'अंबाला जीवितम' को सफलतापूर्वक प्रकाशित किया। उन्होंने कई प्रमुख पुस्तकों का मराठी

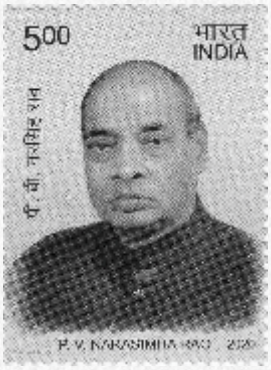

से तेलगू एवं तेलगू से हिंदी में अनुवाद किया एवं विभिन्न पत्रिकाओं में कई लेख एक उपनाम के द्वारा प्रकाशित किये। आप 1968 से 74 तक आंध्र प्रदेश के तेलुगू अकादमी के अध्यक्ष एवं 1972 से मद्रास के दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा के उपाध्यक्ष रहे।

1993 में साम्प्रदायिक राजनीति और फिर मुंबई में हुए दंगे के कारण आईं मुश्किलों में भी पी.वी. नरसिम्हा राव ने कहा कि 'भारत की सुधरती अर्थव्यवस्था को बमों से बरबाद नहीं होने देंगे। ऐसे बड़े देश में क्या हम अर्थव्यवस्था को अस्त–व्यस्त करने के लिए दो या तीन बमों की अनुमति देंगे? हम ऐसा होने की इजाजत नहीं देंगे।'

15 अगस्त 1993 में लाल किले पर अपने उद्‌बोधन में उन्होंने कहा कि 'समाज का ताना–बाना नहीं टूटने दिया जाएगा।'

निष्ठावान राष्ट्रनायक

पी.वी. नरसिम्हा राव का स्वास्थ्य खराब रहता था, उसके बावजूद भी उन्होंने अपने दायित्वों का निर्वाह पूरी लगन और निष्ठा से किया। इनके दिल में देश के प्रति प्रगाढ़ प्रेम था। यह पहले ऐसे प्रधानमंत्री थे, जो दक्षिण भारत के थे, जिनको हिंदी नहीं आती थी तो भी उन्होंने महाराष्ट्र के नन्द्याल से चुनाव लड़ा और उसमें 5 लाख वोट से जीत हासिल की। जिसके लिए इनका नाम गिनीज बुक में शामिल किया गया। भारत के राष्ट्रपति ए पी जे अब्दुल कलाम ने इनके लिए कहा था कि 'यह ऐसे देशभक्त है जो राजनीति से देश को सर्वोपरि मानते है।'

इन्हें प्रतिभा मूर्ति लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया। देश सेवा के क्षेत्र में इनके समर्पित कार्यों को देखते हुए इन्हें भारत रत्न सम्मान दिया जाना चाहिए था।

राजनीति से संन्यास

1996 के चुनाव में काँग्रेस को हार का सामना करना पड़ा, जिसके बाद राव ने राजनीति से संन्यास ले लिया। सक्रिय राजनीति से जाने के बाद साहित्य में रुचि होने के कारण उन्होंने अपना समय साहित्य को समर्पित किया।

पी.वी. नरसिम्हा राव ने 23 दिसम्बर 2004 संसार को अलविदा कह दिया। इनका अन्तिम संस्कार हैदराबाद में 24 दिसम्बर को राजकीय सम्मान के साथ किया गया। पी.वी. नरसिंह राव का राजनीतिक एवं साहित्यिक योगदान बहुत उल्लेखनीय है। बहुमुखी प्रतिभा के धनी, देशभक्त, राष्ट्र नायक पी.वी. नरसिम्हा राव जी की 100वीं जयंती पर उनको सादर नमन।

कीर्ति श्रीवास्तव
भोपाल (मध्य प्रदेश)

COUNT AND TELL THE NUMBERS

उत्तर इसी अंक में

Dharampal Dogra 'Mintu'
Una (Himachal Pradesh)

परमवीर चक्र विजेता

करम सिंह

थे शाने–ए–पंजाब करम सिंह
परमवीर योद्धा महान थे,
हिम्मत वाले बड़े बहादुर
भारत माँ की रखे आन थे।

काश्मीर में टीथवाल की
इक चौकी पर अड़े हुए थे,
ज्यों दुश्मन ने हमला बोला
साहस के सँग खड़े हुए थे।

शत्रु देश के छक्के छूटे
समरभूमि में जय थी पायी,
जान सलामत रखकर खुद की
टुकड़ी की भी जान बचायी।

दुश्मन सैनिक उनसे हारे
भारत का परचम लहराया,
पहले जीवित सैनिक थे वो
परमवीर था जिसने पाया।

डॉ. वेद मित्र शुक्ल, नई दिल्ली

'लगा निशाना पत्थर से' पृष्ठ 7 का शेष....

ललकारने लगे। खतरा भाँपकर पकड़े जाने के डर से बदमाशों ने वहाँ से भागने की कोशिश की थी। जिसे बैंक से बाहर निकलते ही गुरजीवन ने नाकाम कर दिया था।

इस तरह नन्हे गुरजीवन ने अपने साहस से गोलियों का सामना करते हुए तीन सशस्त्र बदमाशों को पकड़वा दिया। जहाँ बहुत सारे लोग बैंक में खड़े गोलियों के डर से बदमाशों के सामने आने की हिम्मत नहीं कर सके। वहीं सिर्फ ग्यारह साल के गुरजीवन ने उनका आमने सामने से मुकाबला किया और उन्हें पकड़वाया भी।

जब सब लोगों को इस नन्हे बहादुर के साहस की इस घटना की जानकारी हुई तो वे हैरान रह गए कि अकेले इतने छोटे बच्चे की हिम्मत से वे तीन हथियारबंद बदमाश पकड़े गए हैं। अखबारों में जब खबर छपी तो लोगों ने नन्हे गुरजीवन के हौसले की सराहना की। पंजाब के तत्कालीन मुख्यमंत्री जी ने गुरजीवन को एक लाख रुपए और चार बिसवा खेती योग्य भूमि देने की घोषणा की। गुरजीवन को वर्ष 2010 के राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार के लिए चुन लिया गया। गणतन्त्र दिवस के अवसर पर देश के प्रधानमंत्री जी द्वारा उसे देश के अन्य चुने हुए बहादुर बच्चों के साथ यह पुरस्कार प्रदान किया गया।

रजनीकान्त शुक्ल
गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)

'पंछी एक डाल के' पृष्ठ 9 का शेष....

छोटे–छोटे बच्चे बच गये। उल्लू दोबारा चिखा तो कौआ बोला– ''अब गला मत फाड़। साँप वापस चला गया है, तेरे बच्चे सुरक्षित हैं।''

उल्लू बोला– ''इस समय मुझे तो कुछ दिखाई नहीं दे रहा, पर तेरी वजह से मेरे बच्चे बच गये। मैं यह तेरा अहसान कैसे उतारूँगा? हम तो सदा से ही एक–दूसरे के साथ दुश्मनी निभाते रहे हैं।'' ''देख उल्लू, तेरे लिए दिन में अँधेरा रहता है, रात में मेरे लिए। पर अपने दिमाग में कभी भी अँधेरा नहीं रहना चाहिए। हम सब एक ही देश यानी एक ही पेड़ के वासी हैं। हम सब अपना–अपना काम करके खाते–कमाते हैं। तब हम रंग रूप या भाषा अलग–अलग होने पर आपस में क्यों लड़ें। इस पेड़ पर रहने वाले सब अपने भाई हैं, उनकी रक्षा करना हमारा कर्त्तव्य है। पेड़ की रक्षा भी हमें ही करनी है। तुम्हें दिन में दिखाई देता तो देखते कि पिछले साल पेड़ काटने आए लोगों को, हम सब यानी तोता, टिटहरी, यहाँ तक कि बाज भी हमारे साथ मिल गया था, किस तरह परेशान करके भगाया था।''

''ठीक कहते हो तुम, पुरानी दुश्मनी के नाम पर पीढ़ी दर पीढ़ी झगड़ना अच्छी बात नहीं। अब तुम दिन के चौकीदार तो रात का मैं। पर यार सोने जा रहा हूँ। ज्यादा काँव–काँव कर परेशान मत करना।''

कौव्वे ने काँव–काँव तो की, पर हँसते हुए।

गोविन्द शर्मा
संगरिया (राजस्थान)

महामारी में बनाए 3 संगठन और लिखी किताब

संस्कृति जैन

बीते साल कोरोना महामारी के दौरान जहाँ ज्यादातर लोग घरों में दुबक कर अवसाद, चिन्ता और उदासी में डूबे रहे वही भोपाल (मध्य प्रदेश) की होनहार, सक्रिय और प्रतिभाशाली बालिका संस्कृति जैन ने किशोरों और युवाओं की बेहतरी के लिए तीन संगठन बना डाले और एक किताब भी लिख दी।

संस्कृति की संस्थाएँ

संस्कृति की पहली संस्था है "टीनटर्न्ज"। यह हाई स्कूल स्टूडेंट्स के लिए ऐसे प्लेटफार्म का काम करती है जहाँ वे इंटर्नशिप और विभिन्न एनजीओ द्वारा उन्हें दी गई स्वयंसेवक की भूमिका का निर्वहन करते हुए समाज सेवा कर सकते हैं। टीनटर्न्ज के माध्यम से संस्कृति ने डेढ़ सौ हाई स्कूल विद्यार्थियों को 50 से ज्यादा संगठनों से जोड़ रखा है। उसकी दूसरी संस्था "द ग्रोइंग सोल्स" एक ऑनलाइन मेंटल हेल्थ ऑर्गेनाइजेशन है। यहाँ मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता के कार्यक्रम चलाए जाते हैं। इसके माध्यम से बच्चे या किशोर संस्कृति या विशेषज्ञों से बातचीत करके अपने संशय भी दूर कर सकते हैं। संस्कृति का तीसरा उपक्रम आइडीलिक मैगजीन है जो युवाओं को अपनी कला का कोई भी स्वरूप प्रदर्शित करने का अवसर देती है।

लेखकीय भूमिका

संस्कृति एक मानसिक सेहत संगठन ब्रेनीबोन्स के साथ भी काम करती रही है। इस संगठन के लिए वह इंस्टाग्राम पोस्ट व कंटेंट तैयार करती है। वह कहती है कि इसके लिए मैंने जो सामग्री तैयार की उससे दूसरे बच्चों के साथ–साथ मेरी मानसिक सेहत को भी काफी फायदा हुआ।

संस्कृति ने लॉकडाउन के दौरान अच्छी–अच्छी किताबें पढ़ना एवं कविताएँ लिखना शुरू किया। जब उसके पास कविताओं की अच्छी संख्या एकत्र हो गई तो उसने इन्हें एक संग्रह के रूप में "बटरफ्लाइज" शीर्षक से प्रकाशित करवा लिया ।

बच्चों को संदेश

संस्कृति का कहना है कि विद्यार्थियों को शुरू से ही पढ़ाई लिखाई के साथ–साथ खेलकूद व जीवन के व्यावहारिक पहलुओं पर भी काम करना चाहिए। उन्हें सामाजिक कार्य, पर्यावरण रक्षा, स्वच्छता जैसे मुद्दों पर मुखर और सक्रिय रहना चाहिए। संगीत की शौकीन संस्कृति अपने हमउम्र बच्चों को संदेश देना चाहती है कि रोज सुबह उठते ही आपको अपने पूरे दिन की योजना बना लेनी चाहिए। इसके लिए समय सारणी तय करना और जरूरी कामों की सूची बनाना अच्छा रहेगा। उसकी इच्छा है कि शिक्षा का अधिकार सभी बच्चों को मिलना चाहिए। बड़ी होकर वह एक टेक एंटरप्रेन्योर बनना चाहती है और अपने ज्ञान को पूरी दुनिया के लोगों के साथ साझा करना चाहती है।

शिखरचन्द जैन
कोलकाता (प.बंगाल)

अजब-गजब का पौधारोपण

एक जंगल था। जंगल में बहुत सारे बन्दर थे। सब के सब लम्बी पूँछ वाले लाल मुँह के बन्दर। उनमें से दो बन्दर कुछ अलग ही तरह के थे। वैसे दिखने में तो वह दूसरे बन्दरों जैसे ही लम्बी पूँछ और लाल मुँह वाले ही थे, लेकिन स्वभाव में कुछ ज्यादा ही चंचल व जिज्ञासु थे। दोनों हमेशा साथ–साथ रहते थे। एक पल भी चैन से नहीं बैठते थे और न ही किसी को बैठने देते थे। आसपास अगर कोई तीसरा नहीं होता, तो आपस में ही एक–दूसरे के कान और पूँछ खींचते रहते।

बन्दरों व दूसरे जानवरों ने उनका नाम भी अलग तरह का रखा था। एक का नाम अजब और दूसरे का गजब। दोनों जंगल में कम और आसपास के शहरों या गाँवों में ही ज्यादा घूमते रहते थे। जंगल भी अब पहले जैसा घना नहीं रहा था। ज्यादातर जानवर या तो मनुष्य के शिकार बन गये थे, या भूख और प्यास के शिकार हो गए थे।

इन दोनों की एक आदत और थी। वे कहीं किसी बच्चे को पढ़ते या लिखते देखते तो उनकी कॉपी किताब व कलम आदि छीनकर भाग जाते और दूर कहीं एकान्त में बैठकर पढ़ने व लिखने की कोशिश करते। उनके लिए तो काला अक्षर भैंस बराबर था। बेचारे एक अक्षर भी न समझ पाते, झक मारकर रह जाते। लेकिन कॉपी और पेन या पेंसिल मिल जाते तो उनसे कॉपी या कागज पर आढ़ी–तिरछी रेखाएँ तब तक खींचते रहते जब तक कि पेंसिल की नोक टूट न जाती या पेन की रिफिल खत्म न हो जाती।

"काश! हम भी इन बच्चों की तरह इन काले अक्षरों को पढ़ लिख पाते!" अजब कागज पर लिखे अक्षरों को देखते हुए बोला। "यदि हम बन्दरों का भी कोई स्कूल होता तो हम भी इन बच्चों की तरह यूनीफॉर्म पहन कर हँसते–मुस्कराते अपने स्कूल जाते।" गजब ने कहा। "और एक–दूसरे का टिफिन छीन कर खाते।" अजब ने मुस्कुराते हुए अपनी मन की बात कही। "हाँ! यदि छीन न पाते तो चुराकर खाते।" गजब ने हँसते हुए कहा। दोनों इस बात पर एक–दूसरे के गले लगकर बहुत देर तक खी–खी कर हँसते रहे।

उसके बाद अनेक घरों के आँगन और छत पर टोह ली, लेकिन न तो कुछ खाने को मिला और न ही पीने को एक बूँद पानी। "दोस्त, अब तो इन मनुष्यों के मन में दया का भाव नहीं रहा। कुछ फल या रोटी अब यहाँ भी नहीं मिलती।" अजब ने कहा। "यहाँ पेड़–पौधे भी तो नहीं दिखते।" गजब ने अजब के बालों में से जूँ निकाल कर अपने मुँह के हवाले करते हुए कहा।

बूझो तो जानें

1

जब खरीदते तब रहता काला,
उपयोग करें हो जाता लाल।
अंतिम रंग सफेद हो जाता,
बताओ कौन दिखाता यह कमाल?

5

ढाई अक्षर का होता नाम,
उल्टा-सुल्टा एक समान।
अँधेरा उससे भागता दूर,
गिरकर होता चकनाचूर।।

2

सौभाग्य सूचक रंग है लाल,
अगल-बगल में रहते हैं बाल।
महिलाओं का यह होता शृंगार,
वे इसे लगाती बार-बार।।

3

चार अक्षर का उसका नाम,
करता रहता दिनभर काम।
गरीबी से है गहरा नाता,
जो बुलाता उसके घर जाता।।

4

नाम में होते हैं अक्षर तीन,
तैरता है पर होती नहीं मीन।
पहले सफेद और बाद में भूरा,
भूख मिटाने का साधन पूरा।।

डॉ.सुरेन्द्र दत्त सेमल्टी
देहरादून (उत्तराखंड)

उत्तर इसी अंक में

टहलते हुए वे दोनों एक पार्क में पहुँच गए। उन्होंने देखा कि एक माली वहाँ कुछ नये पौधे लगा रहा है और दूसरा माली पुराने पौधों को पानी सींच रहा है। अजब–गजब थोड़ी देर तक यह कौतूहल देखते रहे। फिर उन दोनों ने एक–दूसरे की आँखों में देखा। आपस में कुछ संकेत हुए और दोनों उछलते हुए माली के पास पहुँच गए।

इससे पहले कि माली कुछ समझ पाता, अजब ने कुछ पौधे उठाए तो गजब ने खाली जग उठाया और तेजी से जंगल की तरफ नौ दो ग्यारह हो गए। दोनों माली अवाक् उन्हें देखते ही रह गए।

जंगल में बन्दरों ने जब उन्हें इस तरह आते देखा तो वे सब भी अजब–गजब के आसपास इकट्ठे हो गए। उन्होंने देखा कि अजब–गजब ने अपने हाथों से फटाफट गड्डे खोदे, और उन गडढ़ों में एक–एक पौधा रोप दिया। "अजब–गजब इन पौधों को पानी कैसे दोगे?" एक बन्दर ने मजे लेते हुए पूछा। "उसके लिए हम यह बर्तन भी लाए हैं। अपनी पहाड़ी नदी से पानी लाकर सींचेंगे।" गजब ने कहा। "पर भैया। क्या इन दो पौधों से जंगल बन जाएगा?" एक बन्दर ने अपनी पीठ खुजाते हुए पूछा। इस बात पर सारे बन्दर खी–खी कर हँस दिए।

गजब ने अजब की ओर देखा फिर अपने पिछले पैरों पर खड़े होकर कहा– "क्यों? क्या तुम सब पौधारोपण में मदद नहीं करोगे?'' सब चुप हो गए और एक–दूसरे का मुँह ताकने लगे। तब अजब ने कहा– "अगर एक–एक बन्दर एक–एक पौधा भी लगाएगा तो मुझे विश्वास है कि यहाँ फिर से घना जंगल बन जाएगा।" अजब–गजब की बातों पर थोड़ी देर तक चुप्पी छा गई। फिर सबने एक–दूसरे को देखा। आपस में सहमति बनी और थोड़ी ही देर में सब बन्दर अपनी–अपनी टोली बनाकर नये पौधों की तलाश में उछलते–कूदते गाँव–शहर की ओर चल पड़े।

राजेन्द्र प्रसाद श्रीवास्तव
विदिशा (मध्य प्रदेश)

वर्ग पहेली

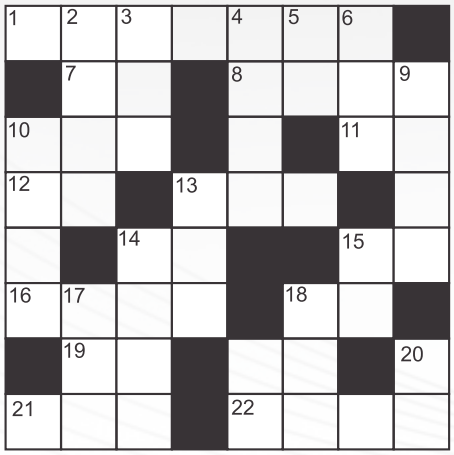

– राधा पालीवाल
कांकरोली (राजस्थान)

बाएँ से दाएँ

1. भारत रत्न पार्श्व गायिका (7)
7. पहाड़, अचल (2)
8. हमेशा साथ देने वाला (4)
10. प्रचुर मात्रा में, बहुत (3)
11. झुका हुआ (2)
12. उद्घोष (प्रचार हेतु) (2)
13. पहरेदार (3)
15. पैंदा (2)
16. चिंदी, टुकड़े (4)
18. घड़ा, मटका (2)
19. हाय, मना (2)
21. कर, महसूल (3)
22. पक्षी, विहग (4)

ऊपर से नीचे

2. वाद्य यंत्र का एक प्रकार, तंत्र वाद्य (4)
3. लाल रंग का ग्रह, भला (3)
4. एक हरा, मीठा, लम्बा फल (4)
5. थोड़ा, अल्प (2)
6. दाँत (3)
9. बावरा, मस्ताना (4)
10. नष्ट करने वाला, विनाश करने वाला (4)
13. संतति, औलाद (3)
14. वासन, पात्र (4)
15. किनारा (2)
17. पदक, मेडल (3)
18. एक गणितीय आकृति जिसकी लम्बाई, चौड़ाई व ऊँचाई समान हो (बन्द आकृति) (3)
20. चाकू की तीखी सतह (2)

उत्तर इसी अंक में

कवि रहीम कहते हैं...

कि अपने मन के दुःख को मन के भीतर छिपा कर ही रखना चाहिए। दूसरे का दुःख सुनकर लोग इठला भले ही लें, उसे बाँट कर कम करने वाला कोई नहीं होता।

रहिमन निज मन की बिथा, मन ही राखो गोय,
सुनी इठलै हैं लोग सब, बाँटी न लेंहैं कोय।

मोती जैसे दाँत चमकते

हमको पाठ पढ़ाया करते
प्यारे अपने टीचर जी।
दाँतों की नित रखें सफाई
कहते हमसे टीचर जी।।

चार तरह के दाँत हमारी
मुख की गुहिका में होते।
कुछ को हम छेदक हैं कहते
कुछ अपने भेदक होते।।

कुछ होते हैं अग्र चर्वणक
कुछ अपने भोजन को पीसें।
खूब चबाकर भोजन खाएँ
कभी नहीं उस पर खीजें।।

सोलह ऊपर सोलह नीचे
दाँत हमारे होते हैं।
करें सफाई, दाँत– जीभ की
दर्द दूर ही सोते है।।

मोती जैसे दाँत चमकते
जो उनकी रक्षा करते हैं।
प्यारे वे सबके बन जाते
जीवन भर वे हँसते हैं।।

डॉ. राकेश चक्र
मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश)

अगर न होता हमको पढ़ना

अगर न होता हमको पढ़ना,
कैसा लगता बोलो बहना?...

फिर तो मजे हमारे होते,
सूरज, चंदा, तारे होते।
सूरज से दिनभर बतियाते,
चंदा को आँगन में लाते।
बादल के संग ढोल बजाते,
वर्षा को हम साथ नचाते।
तारों का बनवाते गहना।...

तरह–तरह के खेल–खिलौने,
माखन–मिश्री भर–भर दोने।
खूब खेलता, खाता जी भर,
रहता खुद पर ही तो निर्भर।
रसगुल्लों की खेती होती,
मेरी बहन समोसे बोती।
तब तो मस्ती का क्या कहना!...

कोई हमें न डाँट लगाता,
रोक–टोक कर हमें बुलाता।
थोड़ी–सी शैतानी करते,
थोड़ी–सी नादानी करते।
अपने मन की सैर लगाते,
नहीं किसी से बैर लगाते।
होता हमें नया ही गढ़ना।...

डॉ.वीरेंद्र कुमार भारद्वाज
पटना (बिहार)

नाटिका

मैं हूँ पिंक परी

पात्र परिचय : पिंकी– प्लास्टिक की थैली के रूप में, रोहित– छठी कक्षा का विद्यार्थी, अन्य पात्र : पिता, डॉक्टर, मरीज, किसान

दृश्य–1

(रसोईघर में गुलाबी प्लास्टिक की पन्नियों को देखकर)

रोहित : अरे तुम! कितनी सुन्दर लग रही हो। पिंक ड्रेस तुम पर खूब फब रही है। बिलकुल परी जैसी लग रही हो। क्या नाम है तुम्हारा?

पिंकी : मैं प्लास्टिक हूँ! मेरा नाम पिंकी है। मैं तो कई रंगों में खिलती हूँ।... और मैं तो हूँ ही राजकुमारी! सबके दिलों पर राज करने वाली। सबके संग रहने वाली। मेरे बिना किसी का गुजारा नहीं होता।

रोहित : झूठ बोलती हो तुम!

पिंकी : अरे नहीं! मैं झूठ नहीं बोलती! जरा अपने घर में ही देख लो! सबसे पहले स्वयं को ही देखो। कल तुम खाने के लिए बाजार से चाऊमीन लाए थे, तो बताओ किसमें पैक करा कर लाए थे?

रोहित : थैली में, और किसमें?

पिंकी : और थैली किस चीज की बनी थी? प्लास्टिक की ही न! और तो और, आज सुबह तुम अपनी बीमार दादी के लिए बाजार से मौसमी का ताजा जूस किसमें लाए थे? पॉलिथीन की थैली में ही न? और साथ में जूस पीने के लिए प्लास्टिक का ही पाइप भी लाए थे। अब जरा अपने पापा से पूछो! वे बाजार से सब्जियाँ, दालें और अन्य सामान किसमें लाते हैं?

रोहित : (कुछ याद करते हुए) पॉलिथीन की थैलियों में!

पिंकी : तुम्हारी मम्मी बाजार से शॉपिंग करके सामान किस में लाती हैं?

रोहित : पॉलिथीन में!

पिंकी : और पॉलिथीन किससे बनती है, प्लास्टिक से ही न!

रोहित : हाँ तो, इसमें इतनी शान बघारने की क्या बात है?

पिंकी : क्यों न हो! आजकल सभी जगह मेरे ही चर्चे हैं। तुम तो हर समय खेलकूद में लगे रहते हो। जरा टीवी खोल कर कुछ अपना ज्ञान बढ़ा लिया करो!

दृश्य–2

टीवी का दृश्य : (रोहित ने रिमोट का बटन दबाया और टीवी देखने बैठ गया।)

बिस्तर पर निस्तेज गम्भीर हालत में एक लड़की लेटी है। उसके माता–पिता भी चिंतित मुद्रा में उदास बैठे हैं।

डॉक्टर : आपकी बेटी को कैंसर है!

पिता : यह कैसे हो गया ?

डॉक्टर : क्या आपकी बेटी जंक फूड की शौकीन है?

पिता : जी हाँ, किन्तु वह कभी बाजार में या रेस्टोरेंट में नहीं खाती। घर पर ही डिलीवरी ब्वॉय से मँगवा कर खाती थी।

डॉक्टर : यही तो! जब गरम भोजन प्लास्टिक की थैलियों में डाला जाता है तो सम्पर्क में आते ही प्लास्टिक के जहरीले तत्व इसमें घुल जाते हैं,जो कैंसर का कारण बनते हैं।

(रोहित ने रिमोट का बटन दबाया और टीवी पर अगला दृश्य आया)

किसान : हाय मेरी गाय! 20 किलो दूध देती थी। मर गई बेचारी! उसे पेट दर्द से छटपटाते देख मैं डॉक्टर के पास ले गया था। पोस्टमार्टम के बाद डॉक्टर ने बताया उसके पेट में 10 किलो पॉलिथीन का भंडार था। जिसने उसकी जान ले ली। हाय राम! मैं तो लूट गया।

(वह रो रहा था।)

टीवी पर अगला दृश्य

डॉक्टर : तुम्हें मलेरिया हुआ है।

मरीज : किन्तु डॉक्टर साहब! मेरा घर तो साफ–सुथरा है। फिर ये मच्छर कहाँ से आए?

डॉक्टर : हो सकता है! तुम्हारे घर के बाहर नालियों में पानी रुका हो!

मरीज : हाँ, आप ठीक कहते हो डॉक्टर साहब! प्लास्टिक की पन्नियों के कारण नालियाँ रुकी पड़ी है और वहाँ सड़क पर पानी जमा है।

डॉक्टर : और जमा पानी में मलेरिया व डेंगू के मच्छर पैदा होते हैं।

दृश्य–3

पिंकी : देखा तुमने, अब कहो!

रोहित : तुम तो परी नहीं, राक्षसी हो, राक्षसी! किसी पर रहम नहीं करती!

पिंकी : हाँ, हूँ मैं राक्षसी! तुम लोगों के कारण ही तो मैं सर्वव्यापी हूँ। पहाड़ों पर मुस्काती हूँ। जंगलों में नाचती हूँ। नदियों–समुद्रों में लहराती हूँ। हर जगह पाई जाने वाली हूँ। नदियों, झीलों, समुद्र में पॉलिथीन, प्लास्टिक की बोतलों के कारण ऑक्सीजन की कमी होने से मछलियां भी मर जाती हैं। और मजेदार बात बताऊँ कि मुझे इन जगहों पर लेकर कौन जाता है? आप लोग ही तो न!

रोहित : अब मैं तुम्हें नहीं छोड़ूँगा! मैं तुम्हें नष्ट कर दूँगा! (गुस्से में दोनों मुट्ठियाँ भींचते हुए।)?

पिंकी : हा– हा, हा–हा! तुम मुझे नष्ट नहीं कर सकते!

रोहित : मैं तुम्हें जलाकर राख कर दूँगा! तुम बहुत जल्दी आग पकड़ लेती हो।

पिंकी : अरे ठहरो तनिक! ये नादानी मत कर बैठना! मुझे जलाने पर तो मैं और भी घातक हो जाऊँगी और जहरीली गैसों का उत्सर्जन होगा!

रोहित : (लाचार–सा) "ठहरो! मैं अभी तुम्हें धरती में गड्ढा खोदकर दबा देता हूँ।

पिंकी : हा–हा, हा–हा! (ठहाका लगाते हुए) अरे मूर्ख! तू मेरा सालों–साल कुछ नहीं बिगाड़ सकेगा, बल्कि इससे धरती बंजर हो जाएगी। फसलों और सब्जियों के लिए भी मैं हानिकारक हूँ।

रोहित : सचमुच बुरी तरह घबरा कर। अब मैं तुम्हें नहीं छोड़ूँगा! नहीं छोड़ूँगा। मम्मी। पापा जल्दी आओ! पकड़ो इसे!

मम्मी : अरे बेटा! क्या हुआ रोहित ?

रोहित : (चारों ओर देखकर) ओह! तो मैं सपना देख रहा था!

(रोहित ने माथे का पसीना पौंछते हुए सपने की सारी बात मम्मी–पापा को सुना दी।)

पापा : बात तो सच्ची और गम्भीर है बेटा! हम सब इसके आदी हो चुके हैं। इसका तो बस एक ही उपाय है।

रोहित : वह क्या पापा ?

पापा : यही कि इसका उपयोग बन्द कर दो। तुम्हारी दादी तो कब से कहती है– 'मेरे

लिए पन्नी में जूस मत लाया करो, बर्तन लेकर जाया करो! दूध प्लास्टिक की थैली में नहीं, डोली में ले आया करो। मैं जब भी सब्जी लेने बाजार जाता हूँ तो मुझे भी तो अपने हाथ का सिला हुआ थैला पकड़ा देती हैं, किन्तु मैं थैला पकड़ने में हीन भावना महसूस करता हूँ। अब तो शुरुआत करनी होगी।

रोहित : हाँ पापा! इस पिंकी की अकड़ तभी खत्म होगी! क्यों न इस नेक कार्य को हम अपने घर से शुरू करें, फिर औरों को करने के लिए कहें। (समवेत स्वर गूँज उठा।)

डॉ. शील कौशिक
सिरसा (हरियाणा)

बुद्धि की परख

इस विचित्र जानवर को ध्यान से देखकर बताइए इसकी रचना में चित्रकार ने किसका मुँह, धड़, पूँछ और पैर का उपयोग किया है ?

उत्तर इसी अंक में

चाँद मोहम्मद घोसी, मेड़ता सिटी (राजस्थान)

दिमागी कसरत

यहाँ दी गई दोनों आकृतियों में 1 से 9 तक के अंक इस प्रकार भरने हैं कि निर्धारित गणितीय क्रिया करने पर वृत्त में दिये गये उत्तर प्राप्त हो सके।

(अ)

☐	+	☐	+	☐	=	14
+		+		+		
☐	+	☐	+	☐	=	15
+		+		+		
☐	+	☐	+	☐	=	16
=		=		=		
14		15		16		

(ब)

☐	x	☐	x	☐	=	42
x		x		x		
☐	x	☐	x	☐	=	120
x		x		x		
☐	x	☐	x	☐	=	72
=		=		=		
28		120		108		

उत्तर इसी अंक में

प्रकाश तातेड़
उदयपुर (राजस्थान)

सत्य की राह

नन्दू और चन्दू दोनों मित्र थे। एक दिन की बात है चन्दू घर में अकेला था। उसकी मम्मी पड़ौसन से मिलने गई थी। नन्दू दौड़ा आया। बोला– ''आओ चन्दू, चलें गेंद–बल्ला खेलते हैं।''

चन्दू के पास गेंद भी थी, बल्ला भी था। बल्ला तो कमरे के कोने में रखा था, पर गेंद अलमारी के ऊपर रखी हुई थी। नन्दू दौड़कर बल्ला ले आया। बोला– ''गेंद तो रखी है अलमारी के ऊपर। मम्मी है नहीं। किस तरह गेंद को उतारें। पंजों के बल खड़े होकर उतारना चाहा गेंद को पर हाथ पहुँच न सका।''

लॉन में एक ओर पड़ी इंटों में से दो ईंट उठा लाया चन्दू और नीचे ऊपर रख दी। इंटों पर खड़ा हुआ। फिर भी हाथ न पहुँच सका। बाहर बरामदे में एक छोटी स्टूल पड़ी थी। दोनों मित्र उसे उठा लाए। अब भी हाथ न पहुँचा।

नन्दू ने कहा– ''चन्दू, बल्ले से लुढ़का कर गेंद नीचे गिरा दो।'' चन्दू ने बल्ला हाथ में लिया, बल्ला गेंद तक पहुँच गया। गेंद नीचे आ गिरी। किन्तु अलमारी पर शीशे की प्याली रखी थी। बल्ला अचानक शीशे की प्याली से टकराया। प्याली सीधी नीचे आ गिरी और फर्श पर गिरकर चकनाचूर हो गई। चन्दू हक्का–बक्का खड़ा रहा। नन्दू ने कहा– ''देखते क्या हो? आओ चुपके से भाग चलें। तुम्हारी मम्मी को पता न चलेगा कि प्याली किसने तोड़ी?''

चन्दू घबराया हुआ–सा चुपचाप खड़ा रहा। नन्दू ने फिर कहा– ''क्या शामत आई है? पिटने से तो अच्छा है, भाग क्यों नहीं जाते?'' ''मैं तो नहीं भागता।'' चन्दू ने कहा– ''मम्मी न जाने किस पर शक करेगी। गलती मेरी है पिट जाए, कोई दूसरा। ये तो बहुत बुरी बात है। मैं तो सत्य की राह पर चलूँगा।''

इतने में चन्दू की मम्मी आ गई। देखा, फर्श पर प्याली टूटी पड़ी है और चन्दू स्टूल पर खड़ा आँसू बहा रहा है। ''क्या हुआ, चन्दू बेटे? रो क्यों रहे हो? तुमने जान बूझकर तो प्याली तोड़ी नहीं है। टूट गई तो क्या ? अब आइन्दा ध्यान रखना।'' मम्मी ने बड़े प्यार से कहा।

नन्दू चुपचाप खिसकने वाला था, पर ये देखने के लिए रुक गया था कि चन्दू के अभी दो–चार चाँटे तो जरूर पड़ जाएँगे। परन्तु वहाँ तो कुछ भी न हुआ। मम्मी ने चाँटे नहीं मारे बल्कि प्यार से समझाते हुए, चन्दू के आँसू पौंछ रही थी। नन्दू के लिए यह एक नया अनुभव था।

सावित्री चौधरी
जयपुर (राजस्थान)

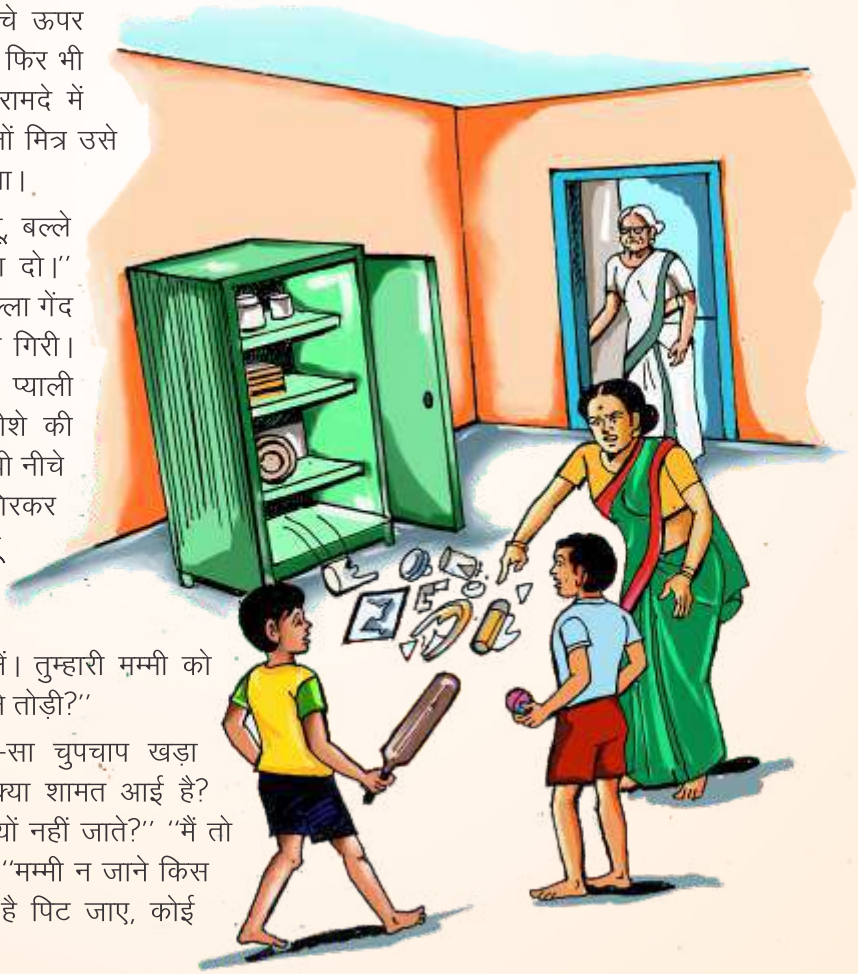

सोच अपनी-अपनी

पौने दस बज गए और शारदा बाई अभी तक नहीं आई। अब मैं घर की सफाई करूँ ? या ऑफिस जाऊँ? मात्र 15 मिनट बचे हैं। ऑफिस पहँचने में 12 मिनट का तो रास्ता ही है। अब कुछ नहीं हो सकता ऑफिस में तो हम सरकारी नौकर है। वहाँ देरी तो चलेगी नहीं। बस इसी ऊहापोह में एक्टीवा उठाई और चल दी। सारा दिन काम की व्यस्तता में बीता। शाम पाँच बजे बैग उठाया, फाइलें समेट कर अलमारी में रखी कि अचानक हेड क्वार्टर से धड़घड़ाती हुई आकस्मिक निरीक्षण के लिए टीम आ गई। हम सभी अचानक चकित हो गए। टीम के मुखिया डॉ. वर्मा जी ने देरी से पहुँचने के लिए माफी माँगी। उनकी गाड़ी रास्ते में खराब हो गयी थी। फिर तेज वर्षा, आँधी, तूफान के कारण उनका पूरा दिन खराब हो गया। शाम के पाँच बज गए थे मगर अभी हमारा कार्यालय बन्द नहीं हुआ था अतः निरीक्षण तो पूरा करना ही था।

अधिकारी आते ही माफी माँग ले तो हमारा व्यवहार स्वाभाविक रूप से सामान्य हो ही जाता है। वरना पाँच बजे बाद ऑफिस में रुकने का कोई प्रश्न ही नहीं। अधिकारी की विनम्रता हमें खुशी–खुशी रुकने को मजबूर कर गयी। निरीक्षण प्रक्रिया समाप्त होने के बाद घर पहुँची तो घर में कोहराम मचा हुआ था। आते ही रसोई में जुट गयी। पेट पूजा करते ही निंद्रा ने अपने आगोश में ले लिया। बेहद थक गयी थी।

अगले दिन उठते ही बर्तनों का ढेर मुझे मुँह चिढ़ा रहा था। उनसे निपट चाय, नाश्ता, भोजन बनाने में जुट गयी। बस फिर क्या था, काम निपटा नहीं और ऑफिस जाने का टाइम हो गया। बड़ी आशा से पिंकी बिटिया को निहारा– ''बेटा सफाई कर लोगी? शारदा बाई जी आज भी नहीं आई।'' ''हाँ, हाँ कर लेगी तुम चिन्ता मत करो।'' पिंकी के पापा बोले। ''आज मैं भी घर पर ही हूँ। हम दोनों मिलकर आज घर को चमका देंगें।''

पिंकी ने खुशी से झाड़ू उठा ली तो मैं अपने अन्य कार्यों में जुट गयी। पिंकी रैम्प की सफाई कर रही थी कि सामने से अंजू व रूही आ धमकी। ''ओह! यह क्या? तुम सफाई कर रही हो? छी छी यह काम अपना नहीं।'' ''वो शारदा बाई जी आज नहीं आई ना।'' पिंकी बोली।

''तो क्या हुआ? हम तो समझते थे कि तुम्हारी मम्मी पढ़ी लिखी व समझदार है। फिर भी तुमसे काम करवाती है ? अंजू की मम्मी भी बहुत बेकार है। सारे घर का काम करवाती है उससे, पर तुम्हारी मम्मी को तो हम अच्छा समझते थे। ये भी ऐसी ही निकली। अरे, सारी मम्मियाँ एक जैसी ही होती है।''

अंजू ने भी हाँ में हाँ मिलायी– ''पटक दे झाड़ू। मत लगा, अपन क्यों लगाए झाड़ू। हम क्या काम वाली बाई हैं? अरे तुझे झाड़ू लगाते मेरी मम्मी ने देख लिया तो, वो भी मेरे पीछे पड़ जाएगी। पिंकी को देख कैसे झाड़ू लगाती है, तुझे भी लगाना पड़ेगा।''

''मैं तो झाड़ू लगाने वाली नहीं, चाहे मम्मी कितना ही चिल्ला ले। तू भी मत लगा वरना ये झाड़ू तुझसे ही चिपक जाएगी, फिर तुझे रोज लगाना पड़ेगा।'' अंजू ने पिंकी से झाड़ू छीनकर दूर फेंक दी। पिंकी खिसियाकर रह गयी।

ऊपर बालकनी में कपड़े सुखाते हुए मेरे कानों में भी बच्चों की बातें पड़ गयी। हाथ घड़ी पर नजर गई तो एकदम से आँखों के आगे ऑफिस तैर गया, पौने दस जो हो चुके थे। अभी इन महान विभूतियों को समझाने का समय भी नहीं था मेरे पास। इसलिए चुपचाप ऑफिस चल दी।

पिंकी थोड़ी देर अपनी हमउम्र सखियों के साथ मम्मी पुराण पर चर्चा करने के बाद अन्दर आयी। हाथ पैर धोए और रूँआसी सी बैठ गयी। ''क्या हुआ बेटा? तुम्हारा चेहरा इतना उतरा हुआ सा कैसे है?'' पिंकी की दादी बोली। ''अरे कुछ नहीं दादीजी।'' पिंकी ने कह कर दूसरी तरफ मुँह फेर लिया।

दादीजी ताड़ गयी कि कुछ न कुछ बात तो है। अपनी पोती का उदास चेहरा पढ़ना वह अच्छे से जानती है। ''अरे बेटा! कुछ तो हुआ है। मुझसे तुम छिपा नहीं सकती।'' दादाजी ने इठलाते हुए से कहा। ''कुछ भी तो नहीं दादाजी। आप भी बेकार ही परेशान हो रहे हो। मुझे कुछ नहीं हुआ।'' हालाँकि उसकी आवाज में खीज सी प्रकट हो रही थी।

अंजू से कोई कहा–सुनी हो गयी? रूही से? नहीं तो बिज्जू से? अरे न ही बस मेरी फ्रेण्ड्स के बीच में इंसल्ट हो गयी। कैसे दादी ने कौतूहल से पूछा पिंकी बोली– ''वो मैं झाड़ू लगा रही थी न, तो सबने मेरी हँसी उड़ाई। मम्मी की भी इसंल्ट हुई, रूही बोली मैं तो तेरी मम्मी को अच्छा समझती थी। पर वो भी दूसरी मम्मियों जैसी ही हैं। दादी ने कहा– ''सफाई करना तो अच्छी बात हैं। इसमें तो तारीफ होनी चाहिए।''

''अरे दादीजी! छोड़ो भी, आप नहीं समझ पाओगी।'' ''क्यों भला? मैं क्यों नहीं समझूँगी मैंने कोई धूप में तो बाल सफेद किए नहीं है। देखो बेटा! साफ सुथरे लोगों को सफाई पसन्द होती है। गन्दे लोगों को गन्दगी। गन्दगी तो यों ही जरा सी लापरवाही से भी फैल जाती है। पर सफाई के लिए मेहनत लगती है। हम सफाई पसन्द साफ सुथरे लोग है। शारदाबाई जी को हमने अपनी मदद के लिए रखा है। उनके न आने से हम स्वयं सफाई करेंगे तभी तो साफ सुथरे रह पाएँगें, वरना हम भी गन्दे हो जाएँगे। सफाई करना हमारी जिम्मेदारी है। तभी तो हम मिल बाँटकर, कर लेते हैं।''

''तुम्हें तुम्हारी मम्मी ने सफाई करने को कहा तो इससे यह उनका व्यक्तिगत काम नहीं हो जाता। हमें तो अपनी पिंकी बिटिया पर गर्व है कि वह अपनी जिम्मेदारी समझती है। हम सभी मिलजुल कर अपनी जिम्मेदारियों को एक दूसरे के सहयोग से पूरा करते हैं। क्योंकि हम सभी एक दूसरे को प्यार करते हैं। कोई दूसरा हमसे कुछ नहीं करवाता, हम स्वयं खुशी–खुशी करते हैं। चार व्यक्ति यदि गलत कर रहे हैं और एक व्यक्ति सही कर रहा है। इसका मतलब यह तो नहीं कि बहुमत होने से सही काम गलत में बदल जाएगा।''

''शारदा को सफाई करने के लिए हम पैसे देते हैं जिसकी वजह से वह हमारा घर साफ करने में हमारी मदद करती है। यदि किसी कारणवश वह सफाई करने नहीं आ पा रही तो हमें यह काम करना ही है इसमें अपमान की तो कहीं कोई गुंजाइश ही नहीं। तुम्हारी मम्मी ऑफिस जाती है तो वहाँ काम के एवज में उन्हें तनख्वाह मिलती है यदि वहाँ काम नहीं करेगी तो उन्हें वेतन नहीं मिलेगा। हम उनके साथ वहाँ काम करने के लिए नहीं जाते। मगर अकसर यह तो कह ही देते हैं। आज लौटते समय समौसे लेते आना या दादाजी का चश्मा लेते आना या पिंकी के लिए आइसक्रीम लेते आना। जानती हो ना यह सहज है। सहजता से हमारी वस्तुएँ आ भी जाती है।''

''इसी सहजता से हम कह देते हैं आज राजमा चावल खाना है। फिर वह हमें मिल भी जाता है। कोई किसी का नौकर नहीं, कोई किसी का मालिक नहीं।'' ''अरे दादीजी अब बस कीजिए, बहुत

बड़ा लैक्चर हो गया। मैं समझ गयी आप क्या कहना चाहती है? यही ना कि घर में जिस तरह से अन्य काम सहजता से हो जाते हैं। उसी सहजता से सफाई भी हो जानी चाहिए। अरे वाह! हमारी बिटिया तो बड़ी होशियार है, सब समझ गयी। दादीजी मैं सब समझती हूँ। मुझे बुरा लगा कि उन्होंने मेरी मम्मी को भी बुरा बताया।'' ''अरे बेटा! यह उनकी अपनी सोच है। वे खुद कामचोर है और उन्हें अपने आपको सही बताना था तो उन्होंने तुम्हारी मम्मी पर दोषारोपण करके अपने दोष छुपाने का प्रयास मात्र किया।''

''तुम काम करके सही दिखती हो तो उन्होंने बोलकर तुम्हें गलत दिखाने का प्रयास किया पर कोई बात नहीं। हैं तो वो तुम्हारी ही सखियाँ। सखियों की बात का क्या बुरा मानना। जाओ अब थोड़ी देर उनके साथ खेल आओ, सारा मूड फ्रेश हो जाएगा। गलत सही का चक्कर अपने आप खत्म हो जाएगा।''

डॉ. चेतना उपाध्याय
अजमेर (राजस्थान)

आओ पढ़ें : नई किताबें

बच्चों में परस्पर पहेलियाँ बूझने की सहज आदत होती है। 112 पद्य पहेलियों की यह पुस्तक बाल मन के अनुकूल है। सही तुकान्त में रची इन पहेलियों में रहस्य व रोमांच है। इनमें हल करने की उत्सुकता है तो ज्ञानार्जन की जिज्ञासा भी। पहेलियों के विषय में पर्याप्त विविधता व नवीनता है। सुडोकू, किंग कोबरा, महात्मा गांधी, बिच्छू, जलेबी, मधुमक्खी, गुल्लक, डॉल्फिन कैलकुलेटर, हेलमेट, चुम्बक, मोबाइल, कम्प्यूटर जैसे नये विषयों पर रचित पहेलियाँ बच्चों का ज्ञानवर्द्धन करेगी।

पुस्तक का नाम : विनम्र बाल पहेलियाँ
मूल्य : 120 रुपये
प्रकाशक : अभिराम प्रकाशन, लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

लेखक : गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
पृष्ठ : 32
संस्करण : 2021

डॉ. विमला भंडारी की पिक्चर बुक 'पृथ्वी ने माँगी चप्पल' में संकलित पाँच कहानियों में रोचकता, जिज्ञासा व ज्ञानवर्द्धन का अनूठा मेल है। हर पृष्ठ पर कहानी के अनुरूप बने सुन्दर सटीक चित्रों एवं बड़े अक्षरों में छपी यह पुस्तक प्राथमिक स्तर के बच्चों के लिए अत्यधिक उपयोगी है। आकर्षक नाम व आवरण की पुस्तक पाठकों को लुभाती है। पाँचों कहानियाँ– सूरज, पृथ्वी, बादल, ओस, तारा जैसे आकाशीय पात्रों पर आधारित है। इनमें कल्पनाशीलता का बेहतरीन ढंग से प्रयोग हुआ है। हर कहानी को पात्रानुकूल संवाद, सरल भाषा व सार्थक कथानक से रचा गया है।

पुस्तक का नाम : पृथ्वी ने माँगी चप्पल
मूल्य : 150 रुपये
प्रकाशक : ज्ञान गीता प्रकाशन, दिल्ली

लेखक : डॉ. विमला भंडारी
पृष्ठ : 52
संस्करण : 2021

पिता को स

बच्चो! बचपन में हर शाम, घर में दो सवाल जरूर होते हैं– पहला माँ से 'खाने में क्या बनाया है?' और दूसरा पिता से 'आज क्या लाए हैं?' भोले–भाले से ये प्रश्न कभी–कभी बच्चों के लिए 'भोले' होकर भी माता पिता के लिए 'भाले' बन जाते हैं, पर अधिकतर माता पिता आपके इन प्रश्नों के मनपसन्द उत्तर देने में अपना सब कुछ दाँव पर लगाकर भी आनन्दित होते हैं।

क्यों मनाते हैं फादर्स डे

फादर्स डे पर हम हमारे पिताजी को विशेष सम्मान प्रदान करते हैं और पूरे परिवार के लिए उनके योगदान का एहसास करते हैं। यह दिन हमें हमारे जीवन में पिता का महत्त्व समझाता है। वैसे तो फादर्स डे विश्व भर में अलग–अलग तारीखों को मनाया जाता है, लेकिन अमेरिका, भारत और कनाडा में यह दिन जून के तीसरे रविवार को मनाया जाता है।

फादर्स डे मनाने के पीछे कई कहानियाँ प्रचलित है, जिनमें से सोनोरा के पिता की स्मृति को फादर्स डे मनाने की मुख्य वजह माना जाता है। पहली बार फादर्स डे 19 जून 1910 को अमेरिका में सुश्री सोनोरा के पिता को सम्मानित करने के लिए मनाया गया था। सोनोरा के पिता विलियम्स स्मार्ट की पत्नी की मृत्यु उनके छठे बच्चे को जन्म देने के समय हुई थी।

उन्होंने अपनी पत्नी के गुजर जाने के बाद अकेले ही अपने 6 बच्चों को पाल–पोस कर बड़ा किया। विलियम्स स्मार्ट के गुजर जाने के बाद उनकी बेटी सोनोरा ने इच्छा प्रकट की कि उसके पिता की स्मृति में फादर्स डे मनाया जाए।

सामान्य भारतीय माँ प्रायः घर में हमारे सामने रहती हैं लेकिन पिता अधिक समय घर के बाहर जा कर, घर की व्यवस्थाओं के लिए कमाने में व्यस्त रहते हैं। उनका काम दिखता नहीं, इसलिए बच्चे चाहते हैं–

बोर अकेले मैं होता हूँ, पापा जल्दी आ जाना।
मेरे उठने से पहले ही, तुम आफिस जाते हो।
और हमेशा सो जाने पर, घर वापिस आते हो।
छुट्टी वाले दिन भी तुमको, पड़ता आफिस जाना।

(डॉ. परशुराम शुक्ल)

बच्चों की आवश्यकता पूरी करने में पिता जी जितना संघर्ष, जितना परिश्रम करते हैं वह हमें अभी अनुभव नहीं हो सकता और पापा भी तो उसे आपसे छुपाए ही रखते हैं, पर बच्चों को थोड़ा अनुमान तो हो ही जाता है।

अच्छे बच्चे वे कहलाते हैं जो पिता के परिश्रम को जानते हुए, अपने सपनों को, उनकी आशाओं के रंग से रंग कर, सच्चे बनाने में जुटे रहते हैं। तब तो पिता से शिकायत भी नहीं रहती

रोज सुबह उठकर खेतों में
हल बैलों के संग जाते हो।
दिनभर कठिन परिश्रम करके
साँझ ढले घर में आते हो
नहीं डाँटते हमें कभी तुम
ईश्वर से सच्चे हो बापू
तुम कितने अच्छे हो बापू

(देशबंधु शाहजहांपुरी)

माँ होती है सदैव मीठी, पर पिता को बनना पड़ता है खटमीठा। जीवन में कई बार माँ की ममता

मझो जरा

से पिता की फटकार अधिक उपयोगी सिद्ध होती है। जो बच्चों की हर बात में हाँ कर दे वह नहीं, सही बात में ही हाँ करे, वह ही है अच्छा पिता। **दुलार अपार पर सीमित स्वीकार, अनुचित को इनकार, ऐसे गढ़ता है पिता संस्कार।**

पिता कोई बच्चों की आवश्यकताएँ पूरी करने वाली जीवित मशीन नहीं हैं, वे आपके जन्मदाता ही नहीं जीवन निर्माता भी हैं। वे आपको उनके जीवन से भी अधिक सफल देखने की आशा में, अपना जीवन खपा देते हैं। बच्चों के सुख के लिए, अपने सुखों को भूल कर जीने वाले, पिता से बढ़कर संसार में और कोई वरदानी देवता नहीं। हमारे शास्त्र कहते हैं 'सर्व देवमयः पिता'। हमारे जीवन के सबसे प्रभावी प्रेरणास्रोत पिता होते हैं। पिता के प्रति सहज ही हमारे मन में एक आदर्श का भाव होता है। इसीलिए कहा गया है–

मात पिता गुरु तीन की बानी।
बिनहिं बिचार करिय हित जानी।।
(गोस्वामी तुलसीदास)

पिता की आज्ञा मानने वाले भगवान राम, पिता के सुख के लिए अपने जीवन के सुख त्यागने वाले भीष्म, पिता के बताए धर्ममार्ग पर अपने प्राण न्यौछावर कर देने वाले श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जी के चारों साहबजादे, प्राण देकर भी अपने क्रांतिकारी पिता नानासाहेब पेशवा का पता अँग्रेजों को न बताने वाली बेटी मैना ऐसे अनेक आदर्श पुत्र पुत्रियों की पितृभक्ति प्रसिद्ध है। जनक ने सीता में आदर्श गुण न भरे होते तो वह राम की आदर्श संगिनी कैसे बन पाती?

माँ आश्रय बनती है पिता पथ बताता है। माँ कहती है थोड़ा विश्राम कर ले, पिता कहता है आगे बढ़ पूरा काम कर ले। माँ की ममता भी जरूरी है पिता की प्रेरणा भी जरूरी है। दोनों में तुलना नहीं है दोनों पूरक हैं एक दूसरे के। एक धरती दूसरा आकाश। धरती पोषण देती है आकाश पौधे को अपनी ओर आकर्षित करता है, विकास तभी होता है। जब तक पौधे का पूरा विकास न हो जाए दोनों को आराम नहीं।

अन्त में मैं यही कहूँगा कि खेल–खेल में तो आप कई बार, घर–घर खेलते हुए पापा बने होंगे। कभी पापा के सहायक बन कर भी देखो। वे बाहर से आएँ, तो उनके हाथ से सामान का थैला ले लो, चाहे आपके लिए उसमें मिठाई, खिलौने या चिज्जी पिज्जी न भी हो। बिना माँगे उन्हें पानी पिला दो। कभी वे सोफे या जमीन पर थककर आँखें मूँद कर बैठे–बैठे ही सो जाएँ, तो धीरे से उनका चश्मा उतार लो। ठंड हो तो चादर ओढ़ा दो। गर्मी हो तो पंखा चला दो। थोड़ी देर के लिए, सही में पापा के पापा जैसे बनकर देखो, बड़ा अच्छा लगेगा। यह सब बेटों को ही नहीं बेटियों को भी करना चाहिए।

बच्चो! बड़े होकर पापा के लिए कुछ करने की सोचो,बहुत अच्छी बात है, पर कर तो अभी भी सकते हो कुछ–कुछ, अपने पापा के लिए। पापा रोज थकते हैं तुम्हारे लिए, पर बताते नहीं, पर बिना बताए ही कभी वे थकने न देंगे तुम्हें अपने लिए।

गोपाल माहेश्वरी
इन्दौर (मध्य प्रदेश)

मेरा प्यारा भारत

पश्चिम से भारत आने के लिए सिन्धु महा नदी को पार करना होता था। पारसी लोग स को ह कहने के कारण सिन्धु के पूर्व का प्रदेश हिन्दुस्तान कहलाया। यह सिन्धु से सालवीन तक और कराकोरम से कन्याकुमारी तक फैला देश है।

हिन्दुस्तान 15 अगस्त 1947 को अँग्रेजों की दासता से आजाद हुआ और इसने अपना नया संविधान बनाया जिसके अनुसार यहाँ एक पूर्ण रूप से स्वतन्त्र, जनतान्त्रिक गणराज्य की स्थापना हुई। आज इसमें 29 राज्य और 8 केन्द्र शासित प्रदेश है।

आइए! संक्षिप्त में उन प्रदेशों के बारे में जानें :–

नक्शे में सबसे ऊपर जम्मू एवं कश्मीर है जिसको सारी दुनिया ने 'पृथ्वी पर स्वर्ग' माना है। उसके ठीक नीचे सिखों का पाँच नदियों वाला पंजाब (पन्ज+आब) है। पंजाब के बगल में किन्नरों का प्रांत हिमाचल प्रदेश है तो नीचे ब्रह्मऋषि प्रदेश हरियाणा है जो महाभारत में सर्वाधिक चर्चित प्रदेश है। इसी में शकुन्तला व दुष्यंत ने भरत को जन्म दिया जिसने हिन्दुस्तान को भारत नाम दिया।

तिब्बत और नेपाल से लगती अतुलनीय सौन्दर्य की धनी देवभूमि, उतराखंड है जो गंगोत्री और यमनोत्री समेत चारों धाम, पंच प्रयाग और पंच केदार अपने में समेटे हैं। इसके नीचे एक समय का ''युनाईटेड प्रोविन्सेज ऑफ आगरा खंड अवध'' है जो आज का उत्तर प्रदेश है। उत्तराखंड कभी इसी का हिस्सा था। भगवान राम और श्रीकृष्ण का जन्म भी इसी प्रदेश में हुआ था।

पश्चिम में पाकिस्तान से लगता वीर राजपूतों का प्रदेश राजस्थान है। यह धरती है भारत के सबसे बड़े रेगिस्तान ''थार'' की जिसके कण–कण में है कहानी कुर्बानी की। इसके नीचे एशिया के शेरों की धरती है गुजरात की। पश्चिम में अरब सागर से लगता वीर मराठों का प्रदेश महाराष्ट्र है।

देश के मध्य में मध्य प्रदेश है जहाँ बहती नर्मदा नदी का हर पत्थर साक्षात शिव समान है। आदिवासियों का प्रदेश छतीसगढ़ कभी मध्य प्रदेश का ही हिस्सा था। बंगाल की खाड़ी पर ओड़िशा प्राचीन काल का ''कलिंगा'' है जिसने दूर–दूर तक अपना परचम फहराया था। नक्शे में नेपाल के ठीक नीचे बिहार है और उसके नीचे झारखंड है जो कभी इसी का हिस्सा था और दोनों के पूर्व में बंगाल है।

हिन्दुस्तान का सबसे पूर्वोत्तर कोना अरुणाचल प्रदेश जहाँ हिन्दुस्तान में सबसे पहले सूर्य के दर्शन होते हैं। इससे लगता हरे पर्वतों और नीली घाटियों का ब्रह्मपुत्र नदी से सिंचित आसाम है। नेपाल और भूटान दो देशों के बीच सिक्किम राज्य है जो विश्व की सबसे ऊँची झीलों के लिए मशहूर है। आसाम के नीचे मेघालय की तुलना स्कॉटलैण्ड से की जाती है। सौन्दर्य तो सब ओर बिखरा पड़ा है। म्यांमार से लगता नागाओं का नागालैंड, मणिपुर और मिजो का मिजोरम है। बांग्लादेश में थैले सा त्रिपुरा है।

भारतीय प्रायद्वीप में दक्षिण की ओर चले तो तेलंगाना और आन्ध्र प्रदेश है। महाराष्ट्र के नीचे अरब सागर से लगता गोवा और कर्नाटक है। गोवा तो बहुत छोटा सा प्रदेश है जहाँ आज भी पुर्तगालियों की छाप स्पष्ट दिखती है।

कन्नड भाषी कर्नाटक काफी बड़ा प्रदेश है और दक्षिण में पूर्व में बंगाल की खाड़ी पर तमिलों का तमिलनाडु है तो पश्चिम से अरब सागर का भगवान

का अपना प्रदेश कहा जाने वाला केरल है। जहाँ तमिलनाडु के भव्य और विशाल मन्दिरों की शिल्पकला आज भी पूरे विश्व को हैरत में डाले है वहीं केरल अपनी हरियाली, अप्रवाही पानी और मसालों के लिए विश्व विख्यात है।

बंगाल की खाड़ी में सैकड़ों द्वीपों का अंडमान और निकोबार द्वीप समूह विश्व के सुन्दर द्वीपों में गिना जाता है। साथ ही ये द्वीप बंगाल की खाड़ी में सुरक्षा प्रहरी का काम करते हैं। चंडीगढ़ एक आधुनिक सुन्दर नियोजित शहर है जो दो राज्यों पंजाब और हरियाणा की राजधानी है।

अरब सागर में महाराष्ट्र और गुजरात तट पर ''दादरा और नगर हवेली'' और दमन और दीव हैं। अरब सागर में अत्यन्त छोटे–छोटे द्वीपों का लक्ष्यद्वीप का क्षेत्रफल तो कुल 32 वर्ग किमी ही है। नीचे बंगाल की खाड़ी की तरफ पुडुचेरी आज भी फ्रांस जैसा ही लगता है। तिब्बत से लगता हुआ बर्फीला मरुस्थल लद्दाख है जो कुछ समय पहले तक तो जम्मू एवं कश्मीर का ही हिस्सा था ।

अन्त में राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली एक विशाल प्रजातन्त्र देश की महान राजधानी है जो रोम की तरह अजर अमर है।

डॉ. प्रकाशचन्द्र गुप्ता
अलवर (राजस्थान)

पारदर्शी शरीर वाले अनोखे जीव

मेढक तो आपने कई तरह के देखे होंगे, लेकिन क्या ऐसे मेढक को देखा है जिसकी त्वचा काँच जैसी पारदर्शी है? जी हाँ, इसे काँच मेढक कहते हैं। इनकी त्वचा में से शरीर के सभी अंग दिखाई देते हैं। मेढक की त्वचा से टाँगों की भीतरी हड्डियाँ, यहाँ तक की शिराओं तथा धमनियों में दौड़ता रक्त भी साफ दिखाई देता है। हृदय तथा अन्दर के दूसरे अंग भी स्पष्ट दिखाई देते हैं। ये मेढक सेण्ट्रोलेनाइडी परिवार के अन्तर्गत आते हैं। दक्षिण और मध्य अफ्रीका में ये बहुतायत में पाए जाते हैं। ये मुख्यतः वृक्षों पर रहते हैं। यह भारत में नहीं पाया जाता है।

हाल ही में एक ऐसी मकड़ी के बारे में पता चला जो देखने में ऐसी लगती है जैसे पूरी तरह शीशे की बनी हुई है। यह थ्वाइटसिना जीनस की मकड़ी है। इसे देखने पर ऐसा प्रतीत होता है मानो इसके पेट पर चमकदार धातु लगी हो जबकि वह उसकी स्कीन होती है। इस प्रजाति की मकड़ियाँ ऑस्ट्रेलिया और सिंगापुर में पाई जाती हैं।

अंटार्कटिका के तटों पर आइस फिश नामक मछली पाई जाती है। इसके शरीर में हीमोग्लोबिन की मात्रा बेहद कम होती है। इसीलिए इसका शरीर शीशे की भाँति पारदर्शी होता है। हीमोग्लोबिन की कमी के बावजूद यह ऑक्सीजन की कमी कैसे पूरी करती है? इस बारे में कुछ वैज्ञानिकों का मानना है कि यह त्वचा के जरिए ऑक्सीजन का अवशोषण करती हैं, जबकि कुछ अन्य लोगों की राय में ऑक्सीजन को शरीर में एक से दूसरे स्थान ले जाने के लिए वह ब्लड प्लाज्मा का उपयोग करती है। इसके शरीर का 55 प्रतिशत हिस्सा ब्लड प्लाज्मा ही होता है।

डॉ. विनोद गुप्ता
मन्दसौर (मध्य प्रदेश)

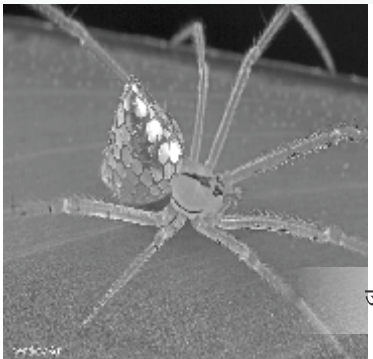
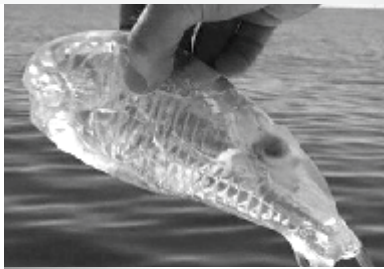

प्रेरक वचन

चाहे आप में कितनी भी योग्यता क्यों न हो, केवल एकाग्रचित्त होकर ही महान कार्य कर सकते हैं।

❖

सफलता की खुशियाँ मनाना ठीक है लेकिन असफलताओं से सबक सीखना अधिक महत्वपूर्ण है।

❖

आपको बड़ा पाना है या बड़ा बनना हैं तो बड़ा जोखिम लेना सीखो।

❖

जिन्दगी में अपनी तुलना किसी से भी करने का दूसरा मतलब है स्वयं की बेइज्जती करना।

बिल गेट्स

जग में हँसते-गाते बच्चे

जग में हँसते–गाते बच्चे
सबके मन को भाते बच्चे।
ऊँच–नीच का भेद न करते
अपना खेल जमाते बच्चे।

हँसते और किलकारी भरते
मन सबका महकाते बच्चे।
कभी तोड़ते कभी फोड़ते
धूम कभी मचाते बच्चे।

कृष्ण सुदामा सा अपनापन
दिल से खूब जताते बच्चे।
घर–घर मेल मिलाप बढ़ाते
ऐसा भाव जगाते बच्चे।

ज्ञानी गुणी शिक्षा से बनते
नियमित पढ़ने जाते बच्चे।
अपने कई गुणों के खातिर
ऊँचा नाम कमाते बच्चे।

दिनेश विजयवर्गीय
बूंदी (राजस्थान)

दोनों चित्रों में आठ अन्तर ढूँढ़िए

उत्तर इसी अंक में

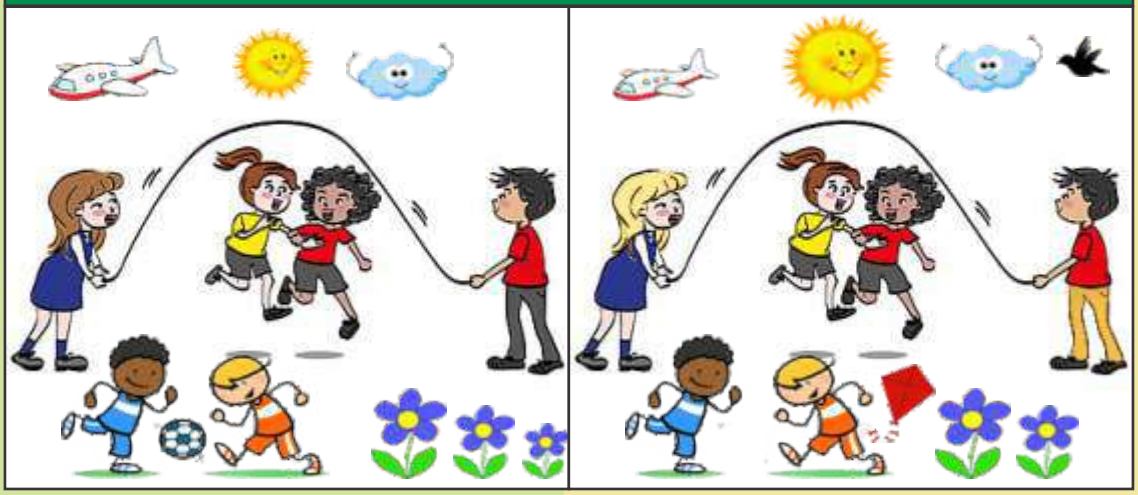

रिटर्न गिफ्ट

"अभी–अभी तुम स्कूल से आये हो। तुमने कपड़े भी नहीं बदले और मोबाइल लेकर बैठ गये। मुझे मेरा मोबाइल दो, मुझे बात करनी है।" माँ ने नमन को डाँटते हुए कहा। "मम्मा, मेरा जन्मदिन आ रहा है अतः मैं रिटर्न गिफ्ट चूज कर रहा था।" नमन ने रूआँसे स्वर में कहा। "रिटर्न गिफ्ट...उसमें क्या सलेक्ट करना, हमेशा पेन सेट देते हैं वही दे देना। वैसे तुम इस बार क्या देना चाहते हो, मुझे भी दिखलाओ।" माँ ने स्वर में नरमी लाते हुए कहा। "मम्मा, मैम कहती हैं कि हमारी धरती पर प्रदूषण बढ़ रहा है। हमें अधिक से अधिक पेड़ लगाने चाहिये।" "तो क्या तुम अपने दोस्तों को पेड़ उपहार में दोगे!" "पेड़ नहीं पौधे...।" "हाँ वही बात...बताओ तुम कौन सा पौधा देना चाहते हो?"

"मम्मा, मैम ने कहा कि कुछ पौधे ऐसे होते हैं जो हमारे वातावरण में मौजूद हानिकारक गैसों को अवशोषित करके वातावरण को शुद्ध करते हैं। पौधे वातावरण के लिए हमारे फेफड़ों की तरह काम करते हैं। वे वातावरण से कार्बन डाईआक्साइड अवशोषित कर, आक्सीजन छोड़ते हैं। मैं सोच रहा था कि क्यों न इस बार ऐसे ही पौधे मैं अपने दोस्तों को रिटर्न गिफ्ट में दूँ।" नमन ने आग्रह के स्वर में कहा।

"बेटा, यह तो बहुत ही अच्छी बात है। क्या तुम्हें ऐसे पौधे मिले?" पाँचवीं कक्षा में पढ़ने वाले अपने पुत्र नमन के ज्ञान से अभिभूत माँ ने कहा। उन्होंने सुना था कि कुछ इनडोर पौधे हवा को शुद्ध करते हैं किन्तु बागवानी में दिलचस्पी न होने के कारण वह इस बारे में ज्यादा कुछ नहीं जानती थीं, नमन की बात सुनकर अब वह भी पौधों के बारे में जानने के लिए उत्सुक हो उठी थी।

"वही तो मैं देख रहा हूँ...। यह देखो माँ, यहाँ कुछ पौधों के नाम लिखे हैं।" "कौन–कौन से...जरा मैं भी देखूँ।" माँ ने अपनी कुर्सी उसके पास खिसकाते हुए कहा। "मम्मा, यह देखो...एलोवेरा, ऐरेका पाम, मनीप्लांट, गरबेरा डेजी, गुलदाउदी का पौधा, स्नेक प्लांट, स्पाइडर प्लांट, रबर प्लांट, पाम ट्री, तुलसी, फाइकस बेंजामिना...।"

"रुक मोबाइल में बहुत छोटा–छोटा दिख रहा है। जरा मेरा लेपटॉप लेकर आना, उसमें देखने और पढ़ने में आसानी रहेगी।" माँ ने उसे रोकते हुए कहा। "बस अभी गया, अभी आया।" नमन ने खुशी से कहा।

वह दौड़कर अपनी माँ का लेपटॉप लेकर आ गया। सचमुच मिनटों में पूरा बगीचा ही लेपटॉप में खुल गया। ऐसा लग रहा था कि हर पौधा उनसे बातें करना चाह रहा है। जैसे–जैसे वे पौधों की विशेषताओं को पढ़ते गये...उनका आश्चर्य बढ़ता गया... यह जानना उनके लिए बेहद रोचक था कि ये पौधे एयर प्यूरिफायर की तरह तो काम करते ही हैं, इनके कुछ औषधीय गुण भी होते हैं। अंततः वे एक पौधे पर रुक गये– रबर प्लांट। इस पौधे की पत्तियाँ खूबसूरत थी। विशेषता में लिखा था– इस पौधे को घर में रखने से कमरे में नमी बनी रहती है। यह पौधा अपने आस–पास के वातावरण में मौजूद धूल कणों एवं हानिकारक गैसों को भी सोख लेता है। जिन लोगों को एलर्जी होती है, उनके लिए यह बहुत उपयोगी है। इसे धूप की भी कम आवश्यकता होती है इसलिए इसे घर में कहीं भी बैडरूम या ड्राइंगरूम में रख सकते हैं। "मम्मा, बड़े पत्ते वाला यह पौघा कैसा है? क्यों न इस बार मैं इसी पौधे को अपने दोस्तों को दूँ।"

"अवश्य बेटा, तुम्हारा जन्मदिन 5 जून को है। तुम्हें पता है सन 1972 को संयुक्त राष्ट्र ने पूरे विश्व में पर्यावरण की सुरक्षा और संरक्षण हेतु विश्व पर्यावरण दिवस मनाने का सुझाव दिया था। दो वर्ष पश्चात् 1974 से 5 से 16 जून तक, समाज में जाग्रति लाने के लिये इसी दिन से प्रतिवर्ष विश्व पर्यावरण संरक्षण दिवस मनाया जाता है।"

"वाओ मम्मा...इस बार मैं अपने जन्मदिन की थीम 'विश्व पर्यावरण दिवस' रखूँगा। मम्मा इस बार हम भी विश्व पर्यावरण दिवस मनायेंगे। अपने हर दोस्त को पौधा देंगे तथा उस पौधे पर उस पौधे की विशेषता की भी एक स्लिप लगा देंगे जिससे उन्हें भी पौधे के गुणों का पता चले।"

"ठीक है बेटा, अभी तो तुम्हारे जन्मदिन में चार दिन बाकी हैं। कल तुम्हारे स्कूल से आने के पश्चात् हम पौधों की नर्सरी चलेंगे। वहाँ जो पौधा तुम्हें पसन्द आये तुम खरीद लेना। एक बात और इन सभी नामों को एक पेपर में नोट कर लेना, कहीं ऐसा न हो कि हम नर्सरी में जायें और पौधे का नाम ही याद न रहे।" माँ ने मुस्कराकर कहा।

"ठीक है मम्मा।" "तुझे भूख लग रही होगी। जा फ्रेश हो ले। मैं तेरे लिए दूध बनाती हूँ।" "लव यू मम्मा...।" कहकर नमन ने माँ को प्यार भरी झप्पी दी।

सुधा आदेश
लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

सुडोकू

यह अंकों का जापानी खेल है, इससे बुद्धि का विकास होता है।

सुडोकू खेलना बहुत आसान है। खाली स्थानों को इस प्रकार भरें कि ऊपर से नीचे और बाएँ से दाएँ प्रत्येक पंक्ति एवं प्रत्येक नौ-नौ खानों के वर्ग में 1 से 9 तक अंक केवल एक बार आएँ।

	3	5	6	7				
4			8	2	9	5		
	8				3		6	
	2				5	8		7
8			2		6			5
3		1	7				2	
	4		9				7	
		2	4	8	7			6
				5	2	4	9	

उत्तर इसी अंक में

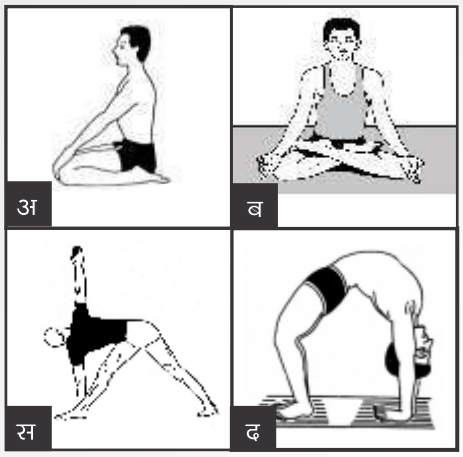

दस सवाल दस जवाब

(1) इन चित्रों को पहचानिये।

(2) विश्व योग दिवस पहली बार कब मनाया गया?

(3) किस प्राचीन वेद में योग के विषय में वर्णन मिलता है?

(4) योग के अनुसार मानव शरीर में कितने चक्र माने गये हैं?

(5) सूर्य नमस्कार कितने चरण (Steps) में किया जाता है?

(6) किस व्यक्ति को 'योग का जनक' कहा जाता है?

(7) कौन सा आसन भोजन के बाद भी किया जा सकता है?

(8) प्राणायाम करने के लिए सबसे उपयुक्त समय कौनसा है ?

(9) भारत सरकार का कौनसा मंत्रालय योगदिवस का आयोजन करता है?

(10) भारत का सबसे बड़ा योग शिक्षा संस्थान कौन सा है?

उत्तर इसी अंक में

- वकील (मुजरिम से) –– तुमने एक ही दूकान में दो बार चोरी क्यों की?
  मुजरिम –– साहब दुकान पर लिखा था आपकी ही दुकान हैं दोबारा अवश्य आईएगा।

- एक यात्री होटल में खाना खाने जाता है।
  वेटर : साहब, यहाँ आपको एकदम घर जैसा खाना मिलेगा, क्या लाऊँ?
  यात्री : रहने दो, फिर मैं घर जाकर ही खा लूँगा।

विशेष – बाल पाठक भी चुटकले भेज सकते हैं।

अनोखा जन्मदिन

मनु सुबह से ही बहुत उदास बैठा था। वह बार–बार मम्मी से ही कह रहा था– "आज काम पर मत जाओ। आज मेरा जन्मदिन है। मैं तुम्हारे साथ जन्मदिन मनाना चाहता हूँ।" मालती भी यही चाहती थी कि आज वह बच्चे का जन्मदिन बहुत धूमधाम से मनाए लेकिन क्या करती मजबूर थी। जाना तो था ही मालकिन मैडम ने साफ हिदायत दे दी थी कि कुछ भी हो जाए काम पर जरूर आना है। आखिर उनकी भी इकलौती बेटी का जन्मदिन है आज। मैडम ने कहा था कि सिर्फ परिवार के सदस्यों को ही बुलाकर एक छोटी सी पार्टी रखी गई है। मालती ने बड़ी मुश्किल से मनु को समझाया।

फिर मनु ने बहुत ही मासूमियत से कहा– "ठीक है। एक शर्त पर जाने दूँगा। तुम मेरे लिए आज केक लेकर आओगी। बहुत दिनों से मैंने केक नहीं खाया है। पिछली बार जब तुम मैडम के यहाँ से थोड़ा सा केक लेकर आई थी। तब मुझे बहुत पसन्द आया था।" तभी चारपाई पर लेटे हुए मनु के पापा ने मनु से कहा– "बेटा! क्यों परेशान कर रहा है माँ को। मेरी खराब तबीयत के कारण पहले ही इस पर बहुत बोझ आ पड़ा है। मेरे इलाज और दवाइयों में भी बहुत खर्च हो गया है।"

पापा की बात सुनकर मनु उदास हो गया था। मालती ने पति की तरफ देखते हुए कहा– "आप हौंसला रखिए। आपकी देखभाल बोझ नहीं है मेरे लिए।" मालती अपने आँसुओं को रोकते हुए चप्पल पहन कर बाहर आ गई थी। मैडम जी के घर में बहुत सुन्दर सजावट की गई थी। मेहमानों के आने की तैयारियाँ भी पूरी हो गई थीं। झाड़ू–पोंछे के बाद उसे रसोई का काम सँभालना था। जगह–जगह फैले हुए रिबन, सजावट के दौरान फूटे हुए गुब्बारों के टुकड़े। सब समेटने के बाद उसने झटपट पोंछा लगाया था और रसोई में मैडम की मदद करने के लिए आ गई थी। पूरे दो घंटे लगे थे सारी डिशेज तैयार करने में। मालती को इस बात की तसल्ली थी कि खाना दिन का ही था। बर्तनों का ढेर हो गया था।

बर्तन धोने के बाद जब उसने जाने की इजाजत माँगी तो मैडम ने कहा– "देखो सारा खाना पत्तल दोने में ही सर्व किया जाएगा, इसलिए ज्यादा बर्तन नहीं होंगे लेकिन मैं चाहती हूँ तुम बर्थडे पार्टी में रुको।"

मैडम की बात सुनकर मालती ने कहा– "मैडम आज मेरे बेटे का भी जन्मदिन है। मुझे उसके लिए केक भी खरीदना है। ज्यादा देर होगी तो वह और उदास हो जाएगा। वह तो आज मुझे यहाँ आने ही नहीं दे रहा था।" मैडम ने एक बड़े पैकेट में बहुत सारा खाना पैक किया और उसे देते हुए बोली– "आज घर पर कुछ मत बनाना। यही सब खाना।" फिर फ्रिज में से एक डिब्बा निकालकर उसे देते हुए बोली– "इसमें केक है दिल्ली वाले चाचा ने भी केक ऑर्डर कर दिया था और मौसी ने भी। एक केक गुड़िया के पापा ने ऑर्डर देकर बनवा लिया है। रात को भी गुड़िया ने एक केक काटा था। ये एक डिब्बा तुम ले जाओ। बच्चे का मन खुश हो जाएगा।"

देखें पृष्ठ 37...

सब्र का इनाम

एक बार की बात है, एक बहुत ईमानदार आदमी था। वो बहुत दिनों से काम की तलाश में था। उसको अपने गाँव में कोई काम मिल नहीं रहा था। मगर रोजगार तो चाहिए था दो वक्त का भोजन तो खुद ही कमाना था।

वह दर–दर भटकता रहा। आखिर उसकी मेहनत रंग लाई। उस पर रहम खाकर किसी ने उसको मदन नामक व्यक्ति का पता बताया जो एक बहुत धनी कारोबारी का सब काम–धाम देखता था। वह भागा–भागा गया और उसने मदन से हाथ जोड़कर विनती की कि– "कुछ काम दीजिये, बस कैसे भी करके काम चाहिए।" "हूँ... काम चाहिए। मगर मैं मजबूर हूँ मेरे मालिक साहब तो काम से कोलकाता शहर गये हैं।"

मदन ने जवाब दिया और वह इस जवाब से निराश हो गया। सिर नीचा करके भरी आँखों को छिपाकर, अपने दोनों पैर घसीटकर वापस लौटने लगा कि मदन का दिल पसीज गया। उसने कहा कि– "रुको, एक काम है मवेशी चराने का, कर सकोगे तुम?" मदन ने सवालिया निगाह से उसका चेहरा और डबडबाई आँखों में देखा। "हाँ हाँ बिलकुल करूँगा।" वह फिर से गिड़गिड़ाने लगा। मदन ने मुसकुराकर उसका कंधा थपथपा दिया और उसको यही काम दे दिया ।

मदन ने कहा कि उसके मालिक की पचास गायें और बीस बकरियाँ हैं। उनको हर रोज घास चराने ले जाना है। बदले में खाने को दो समय भरपेट रोटी दाल मिलेगी और पहनने को कपड़े मिल जायेंगे। वह मान गया, उसको यह काम बहुत ही अच्छा लगा।

वह अब चरवाहा बन गया। उसके पास काम था। पहले दिन उसकी ऊर्जा को परखने के लिए मदन खुद उसके साथ जंगल गया। एक ही दिन में वह भाँप गया कि उसका चुनाव उपयुक्त है, यह तो बहुत ही मेहनती चरवाहा है। मदन पूरी तरह से निश्चिंत हो गया। चरवाहा भी प्रसन्न हुआ। चरवाहा सुबह सबसे पहले जाग जाता, अब वह हर रोज अपने मालिक की गाय और बकरियों को दूर जंगल ले जाने का काम करता था। उसको पूरी छूट मिली हुई थी कि वह जिस जंगल मे भी जाना चाहे अपनी मनमर्जी से गाय बकरी को ले जा सकता था।

हरा–भरा जंगल उसको आनन्द से भर दिया करता था। कभी झरना मिल जाता था तो कभी कल–कल बहती नदी, ऐसे में वह स्नान करता और हरी घास पर चैन से लेट जाता था। गाय, बकरी भी बहुत मस्त रहते। खूब पानी पीते और ताजी, मुलायम हरी–हरी घास और पत्तियों से पेट भर लेते। हर दिन एक नया नजारा, हर दिन नये–नये दृश्य, उसको लगता ही नहीं था कि वह रोज किसी काम के लिए जंगल जाता है।

खुद वह भी बहुत मेहनत से अपना काम करता था। उसका स्वभाव बहुत शान्त और संतोषी था इसलिए वह कभी चीखता या चिल्लाता नहीं था। बेजुबान पशु उसको बहुत चाहने लगे थे। उसने सबके प्यारे–प्यारे नाम भी रख दिये थे। सबसे कमाल की बात तो यह थी कि "राधा" बोलने पर वही गाय दौड़ कर आती और उससे लिपट जाती जिसका नाम उसने राधा रखा था और मेनका पुकारने पर वही बकरी मे, मे, की आवाज करती उसके नजदीक पहुँच जाती थी।

गाय, बकरियों को उसकी आवाज में ही संकेत मिल जाता था और चरवाहे को आज तक कभी किसी को भी डंडे से हाँकना नहीं पड़ा था। दिन गुजरते रहे। कुछ दिनों बाद मालिक कोलकाता से वापस लौटे तो उनको भी खबर लग गई कि एक बहुत ही नेकदिल चरवाहा उनका कर्मचारी है। हर रोज जंगल आता जाता है। मालिक को हौले–हौले बाकी बातें भी मालूम होने लगी। मिसाल के तौर पर चरवाहा बहुत परिश्रमी है, बहुत सीधा–साधा है आदि आदि। मालिक को यह भी पता लगा कि यह चरवाहा निडर है और गाय बकरियों को अलग–अलग जंगलों में ले जाता है। अब इस बात से मालिक को कुछ नया सूझ गया। वे जानते थे कि यहाँ जंगलों में घुसना खतरनाक है और जंगल है दुर्लभ जड़ी बूटी का भंडार।

एक दिन चरवाहे को अपने पास बुलाकर मालिक ने कहा कि– "तुम जंगल तो जाते ही हो। ऐसा करो, आते समय उसी जंगल से कोई सी भी जड़ी–बूटी बीन लाओ, रोज कुछ अतिरिक्त पैसा दे दूँगा।" पर चरवाहा पैसों की बात पर बिलकुल भी खुश नहीं हुआ। मालिक को लगता था कि वह इस प्रस्ताव पर उछल पड़ेगा। पर यह तो अजब ही जीव निकला, बिलकुल खामोश खड़ा रहा। अब मालिक ने टोका– "अरे, बोलो तो सही क्या कुछ सुना नहीं तुमने?"

मगर वह चरवाहा तो सचमुच ही किसी और ग्रह का प्राणी निकला। उलटा भोलेपन से यह कहा– ''मालिक मेरी शक्ति की भी सीमा है।" उसने साफ–साफ टाल दिया। उसके इस बर्ताव का मालिक ने बिलकुल बुरा नहीं माना। वे कारोबारी थे और सालों से लोगों की नीयत परख चुके थे। मालिक यह बखूबी जानते थे कि यह जड़ी–बूटी कितनी कीमती हैं? यह बात शायद इस गरीब को भी पता लग चुकी है या फिर यह भी सम्भव है कि किसी ने इसके कान भर दिये होंगे। तभी तो इतना ऐंठ रहा है।" यह विचार करते हुए वे मन ही मन कुटिल हँसी हँसने लगे।

दो दिन तक धैर्य रखने के बाद उन्होंने चरवाहे को फिर बुलाया और इस बार जड़ी– बूटी बीनकर लाने पर सोना–चाँदी का प्रलोभन दिया। चरवाहा मंद–मंद मुस्कुराया और "जी मालिक" कहकर लौट गया। उसकी मुस्कान के दर्शन और जवाब से मालिक की तो बस बाँछें खिल गई। उनके हिसाब से चरवाहा जाल में फंस चुका था और पिछले दिनों ही उसने लगभग सभी जड़ी–बूटी पहचान कर बता दी थी। यानी अब तो बस पौ बारह। मालिक अपने दाँये बाँये धन के ढेर का सपना देखने लगे।

मगर यह क्या? उस शाम को चरवाहा कुछ नहीं लाया फिर दूसरी, तीसरी शाम भी खाली ही रही। अब तो मालिक के सब्र का बाँध टूट गया। वे गुस्से में दाँत पीसने लगे। एक दिन मौका पाकर मदन और मालिक दोनों ने उस पर कुछ बेमतलब के आरोप लगाये। उसकी सबके सामने खूब बेइज्जती की और उसको यहाँ से निकल जाने को कह दिया। वह सब सुनकर चुपचाप जाने लगा तो मालिक तिलमिला गये और उसको निर्लज्ज समझ कर गुस्से में उसका हाथ पकड़ लिया। तभी चरवाहे के हाथ पर रखा दुशाला सरक कर नीचे जमीन पर गिर पड़ा।

अब तो मदन और मालिक दोनों सकपका ही गये क्योंकि उनका हाल ऐसा था कि काटो तो खून नहीं। मालिक बुरी तरह झेंप गये थे। चरवाहे की जो दो हथेली थी उसमें भी बस एक–एक अँगूठा ही था। मालिक शर्मसार हो गये। सारी बात समझ गये। उनकी आँखें भर आईं और उसने फिर भी पूछ लिया– ''तुम इतने दिनों से गाय बकरियों को कैसे नियन्त्रण में रखते हो?"

चरवाहा बोला– "मालिक, ये जानवर इनसान से कहीं ज्यादा समझदार होते हैं। मुझे इनको कभी रस्सी बाँधनी नहीं पड़ी, डंडा मारना नहीं पड़ा।" मालिक ने उसी दिन चरवाहे को गोद लिया और अपने पुत्र की तरह पाला। चरवाहा अपने भाग्य पर हैरान था। तकरीबन दो महीने पहले उसको दो वक्त की रोटी के लाले थे और आज उसके तन पर रेशमी दुशाले थे।

पूनम पाडे
अजमेर (राजस्थान)

'अनोखा जन्मदिन' पृष्ठ 34 का शेष...

मैडम की बात सुनकर मालती ने मैडम से कहा– "आप बहुत अच्छी हैं मैडम। आप बर्तनों में पानी डालकर रख देना मैं कल सुबह जल्दी आकर सारे बर्तन धो दूँगी।" मैडम ने मुस्कुराते हुए कहा था– "तुम भी मेरी बहुत बड़ी मददगार हो, जहाँ दूसरी मेड्स बहुत छुट्टियाँ करती हैं, वहीं तुमने जरूरत के समय मुझे कभी निराश नहीं किया।" मैडम की बात सुनकर मालती मुस्कुराने लगी थी।

घर पहुँच कर उसने मनु को गले लगाया और कहा– "आओ बेटा! हम अच्छा–अच्छा खाना खाते हैं। मैडम जी ने मेहमानों से भी पहले हमारे लिए खाना दिया है।" अब मनु ने पापा को भी जगा लिया था जो दोपहर वाली गोली लेकर सो रहे थे। तीनों ने साथ बैठकर खाना खाया। खाना बहुत ही स्वादिष्ट था। मनु केक की बात तो भूल ही गया था। मालती ने खुशी से चहकते हुए उसके हाथ में केक का डिब्बा दिया।

मनु केक देखकर बहुत खुश हुआ। फिर केक की तरफ देखते हुए बोला– "अरे वाह! इतना बड़ा केक। मजा आ जाएगा पर यह तो बहुत सारा है, इतना सारा तो हम खा ही नहीं पाएँगे। मैं अपने दोस्तों को भी केक खिलाऊँगा।" तभी मालती ने कहा– "जरूर बेटा, यहाँ बहुत गर्मी हो रही है। थोड़ी देर में केक काटते हैं।"

मनु ने चुटकी बजाते हुए कहा– "मम्मी! क्यों ना केक छत पर काटा जाए।" मनु की बात सुनकर पापा बोले– "हाँ, बाहर तो जाना हो नहीं रहा है। थोड़ा मन बहल जाएगा।" मम्मी ने कहा– "लेकिन बेटा हमारे इस एक कमरे के घर की छत अभी पूरी तरह से तैयार ही नहीं है।" मनु बोला– "कोई बात नहीं मम्मी। हम सीढ़ियों से छत पर तो जा ही सकते हैं। छत कैसी भी हो, पर हमारी अपनी तो है।"

मम्मी ने कहा– "ठीक है। मैं और तुम्हारे पापा तैयार होते हैं। तुम भी जल्दी से तैयार हो जाओ।" मनु झटपट अपना नया कुर्ता पजामा पहन कर तैयार हो गया था। तीनों छत पर आ गए थे। शाम के इन्द्रधनुषी रंगों से सजे वातावरण में मनु ने केक काटा। मम्मी–पापा ने तालियाँ बजाई और खूब बधाइयाँ दी। तीनों ने एक–दूसरे को केक खिलाया।

मनु ने कहा– "वाह! मम्मी बहुत ही स्वादिष्ट केक है।" फिर कुछ सोचते हुए बोला– "हम इतना केक तो खा नहीं सकते और हमारे घर में फ्रिज भी नहीं है। मैं एक बड़ा बर्तन लेकर आता हूँ जिसमें यह केक ढककर रख लेता हूँ फिर अभी जाकर अपने दोस्तों को खिला दूँगा।" मनु नीचे बर्तन लेने गया था तभी उसने नीचे से ही आवाज लगाई– "मम्मी! पड़ोस वाली आंटी और अंकल आए हैं।"

मम्मी ने कहा– "हाँ, हम आते हैं नीचे।" यह कहकर मम्मी और पापा नीचे आ गए थे। मनु भी नीचे अंकल–आंटी से बातों में लग गया था। तभी मम्मी को अचानक याद आया– "अरे मनु केक तो ले आ छत से।" मनु दौड़ कर छत पर गया तो वहाँ का नजारा देखकर हैरान रह गया। छत पर बहुत सारे बन्दर थे और वे मजे से केक खा रहे थे। मनु मुस्कुराते हुए नीचे आया और बोला– "मम्मी! दोस्तों को तो केक नहीं खिलाया और अंकल आंटी को भी नहीं खिला पाया लेकिन ऊपर बहुत सारे लाल मुँह वाले बन्दर केक खाकर मेरा जन्मदिन मना रहे हैं। मम्मी–पापा और अंकल आंटी खिलखिला कर हँस पड़े थे। मनु को अपना अनोखा जन्मदिन बहुत पसन्द आया था।

डॉ. अलका जैन 'आराधना'
जयपुर (राजस्थान)

जरा हँस लो

पिता – बेटे! तुम्हारी कक्षा में सबसे मेहनती कौन है?

पुत्र– जी मैं हूँ।

पिता– वह कैसे?

पुत्र : अपनी कक्षा में मैं हमेशा बेंच पर खड़ा रहता हूँ जबकि सभी बैठे रहते हैं।

देवताओं का प्रिय अस्त्र

तीरंदाजी

तीरंदाजी का इतिहास बहुत पुराना है। शायद यह मनुष्य के सबसे आरम्भिक हथियारों में से रहा होगा, जो समय के साथ खेल के लिए जाना जाने लगा। तीरंदाजी को शुरू से देवताओं के साथ जोड़ा गया है। अगर भारतीय भगवानों में श्रीराम से लेकर महादेव, अर्जुन और कर्ण तक ने इसका प्रयोग किया है तो यूनानी देवता अपोलो और रोमन देवता क्यूपिड तक इसका प्रयोग करते हैं।

यह अस्त्र खेल के रूप में कब ढला, कहना मुश्किल है। करीब 5000 वर्ष ईसा पूर्व मिस्र में इसके प्रयोग का उल्लेख मिलता है। इसका सबसे ज्यादा प्रयोग एशिया में हुआ और शायद इसीलिए जब इसे खेल के रूप में मान्यता मिली, तो विश्व खेलों में एशियाई तीरंदाजों का ही बोलबाला रहा। तीरंदाजी के खेल में सबसे ज्यादा लोकप्रिय है टार्गेट आर्चरी। इसमें एक दिए गए गोले पर निशाना साधना होता है। इसके अलावा फील्ड आर्चरी, थ्री डी आर्चरी (आदमकद टार्गेट पर निशाना) आदि भी लोकप्रिय हैं।

तीरंदाजी के खेल को ठीक से चलाने व इसके नियम बनाने के लिए फेडरेशन की जरूरत महसूस हुई। सन 1931 में पोलैंड में सात देशों फ्रांस, चेक रिपब्लिक, स्वीडन, पोलैंड, अमेरिका, हंगरी और इटली ने इसके लिए पहल की। इसके फेडरेशन को नाम मिला 'फीटा' यानी इंटरनेशनल आर्चरी फेडरेशन। तीरंदाजी का फेडरेशन बनने से पहले ही यह खेल ओलम्पिक खेलों में शामिल हो गया था। सन् 1900 के पेरिस ओलम्पिक में यह पहली बार शामिल हुआ। पर इसे ज्यादा प्रोत्साहन नहीं मिला। 1920 के ओलम्पिक के बाद इसे हटा दिया गया और फिर 1972 के म्यूनिख ओलम्पिक में इसकी वापसी हुई। तब से यह ओलम्पिक का अंग है। ओलम्पिक में तीरंदाजी प्रतियोगिताओं में दक्षिण कोरिया का बोलबाला रहा है और सबसे ज्यादा स्वर्ण पदक उसी ने जीते हैं।

राष्ट्रमंडल खेलों में पहली बार आर्चरी को 1982 में शामिल किया गया। पर इसे समर्थन नहीं मिला और इसे खेलों से हटा दिया गया। 2010 में नई दिल्ली के कॉमनवेल्थ गेम्स से इसकी वापसी हुई। तीरंदाजी विश्व कप चार चरणों में कई देशों में आयोजित किया जाता है। ये चार चरण प्रत्येक श्रेणी के सर्वश्रेष्ठ आठ तीरंदाजों को तय करते हैं, जो तीरंदाजी विश्व कप फाइनल में पहुँचते हैं।

दक्षिण कोरिया (246) और अमेरिका (256) ने इस प्रमुख इवेंट में सबसे अधिक पदक जीते हैं। प्रतियोगिता में रूस (107) और इटली (106) ने भी 100 से अधिक पदक अपने नाम दर्ज किए हैं।

तीरंदाजी विश्व कप में भारत

वहीं, भारत ने तीरंदाजी विश्व कप में 82 पदक हासिल किए हैं। इसमें 17 स्वर्ण, 36 रजत और 29 कांस्य पदक शामिल हैं। तीरंदाजी विश्व कप में सबसे अधिक पदक जीतने वाले भारतीय तीरंदाज –

दीपिका कुमारी – तीरंदाजी में दीपिका कुमारी के नाम विश्व कप में छह पदक (एक स्वर्ण, पाँच रजत और एक कांस्य) दर्ज हैं।

जयंत तालुकदार – तालुकदार ने तीरंदाजी विश्व कप में पाँच पदक (दो स्वर्ण और तीन कांस्य) जीते हैं।

डोला बनर्जी – डोला ने तीरंदाजी विश्व कप में तीन पदक (दो स्वर्ण और एक कांस्य) हासिल किए हैं।

अनिल जायसवाल
नई दिल्ली

शैतानी छूट गई

नन्हा गोलू बहुत शैतान था। उससे आसपास रहने वाले सभी लोग बहुत परेशान थे। उसने अपने ही जैसे बच्चों की एक टोली बना रखी थी और वह उन सबका लीडर था। रोज उसकी शिकायतें लेकर कोई न कोई घर पर आ धमकता लेकिन उसकी मम्मी किसी की बात पर ध्यान न देती। घर पर वह कोई शरारत न करता, बस घर से बाहर निकलते ही पता नहीं उसे क्या हो जाता। उसे हर समय शरारतें ही सूझती रहती।

बस्ती से बाहर एक बड़ा सा फल का बगीचा था। उसकी बूढ़े बच्चू माली चौकीदारी करते थे। अकसर गोलू अपने साथियों को लेकर वहाँ पहुँच जाता और बगीचे में घुसकर ढेर सारे कच्चे फल तोड़ता। जब तक माली की नजर उन पर पड़ती तब तक वे सब भाग जाते। कई बार बच्चू माली ने गोलू और उसके साथियों को समझाया। "बेटा, तुम्हें इन कच्चे फलों को तोड़कर क्या मिलता है? फल पक जाएँगे तो मैं तुम्हें ढेर सारे फल खाने के लिए दे दूँगा।" "ठीक है काका।" उस समय शरीफ बनकर गोलू और उसके साथी कहते और उसके बाद फिर दूसरे दिन से शरारतें करने के लिए बगीचे में पहुँच जाते। पड़ौसी के आँगन में खड़े पेड़ों से फल तोड़ देते। कच्चे फल उनके किसी काम के न रहते पर पता नहीं गोलू और उसके साथियों को उन्हें बरबाद करने में क्या मजा आता था?

गोलू की मम्मी एक सीधी–सादी महिला थी। वह भी उसे समझाती। "बेटा अपना ध्यान फालतू बातों से हटाकर पढ़ाई पर लगाया करो।" "पढ़ता तो रहता हूँ मम्मी।" "अकसर लोग तुम्हारी शिकायत करने आते हैं। इसका मतलब घर से बाहर तुम कुछ न कुछ तो शरारत जरूर करते होंगे।" "और करते हैं और नाम मेरा फंसा देते हैं।" "उन्हें तुमसे क्या बैर हो सकता है?" "मुझे क्या पता। यह बात मेरी समझ में भी नहीं आती कि हर कोई मेरा नाम लेकर शिकायत करने आपके पास क्यों आ जाता है।" मासूम सा चेहरा बनाकर गोलू कहता। मम्मी उसकी बात सुनकर चुप हो जाती।

गोलू के घर पर एक बड़ा सा किचन गार्डन था जिसमें उसकी मम्मी ने तरह–तरह की सब्जियाँ उगा रखी थी। वह बगीचे में बहुत मेहनत करती। गोलू भी कभी–कभी उनके साथ बगीचे में पौधों को पानी देकर मदद कर देता।

एक दिन वह सुबह बाहर आया तो उसने देखा एक बड़ा सा बन्दर उनके बगीचे में बैठा है और सब्जी के पौधों को उखाड़ रहा है। उसने कुछ कच्ची सब्जियाँ खाई और बाकी बरबाद करके इधर–उधर फेंक दी। उसे देखकर गोलू

चिल्लाया। "मम्मी गार्डन में बन्दर है। उसने हमारा सारा बगीचा बरबाद कर दिया।" उसकी आवाज सुनकर मम्मी–पापा बाहर आ गए। उन्होंने बन्दर को भगाने की कोशिश की तो वह घुड़की देने लगा। उसके बड़े–बड़े दाँत देखकर वे डर गए।

उसके पापा एक छड़ी उठाकर लाए लेकिन उनकी हिम्मत उस खूंखार बन्दर तक पहुँचने की न हो सकी। वे तीनों दूर खड़े होकर बन्दर का उत्पात देखते रहे। तभी गोलू बाहर से कुछ पत्थर उठा लाया और उसने बन्दर पर पत्थर फेंकने शुरू किए। पत्थर की मार से वह डरकर भाग गया। उसके जाने के बाद मम्मी बगीचे में पहुँची। पौधों की हालत देखकर उन्हें बहुत दुःख हुआ। वह बोली– "इसने तो मेरा सारा बगीचा बरबाद कर दिया। सब्जी खा लेता पौधे उखाड़कर और कच्ची सब्जी तोड़ कर इसे क्या मिला?" मम्मी का उतरा हुआ चेहरा देखकर गोलू को बड़ा दुःख हो रहा था। उनकी इतने दिनों की मेहनत बेकार चली गई थी।

अनायास ही इस समय गोलू को बच्चू माली का चेहरा याद आ गया। उनके द्वारा कच्चे फल तोड़ने के बाद वे भी तो इसी तरह उदास होकर एक किनारे बैठ जाते थे। गोलू सोचने लगा 'वे सब भी इसी बन्दर की तरह बच्चू माली के बगीचे को नुकसान पहुँचाते रहते हैं। वे उन्हें समझाते कि फल पक जाने पर पेट भरकर खा लेना लेकिन इन्हें बरबाद मत करो। आज जब बन्दर ने उनके घर पर उत्पात मचाया तब उसे एहसास हुआ कि किसी की मेहनत बरबाद होने पर उसे कितना दुःख होता है।'

"मम्मी उठो हम बगीचा फिर से बनाएँगे।" "कहीं वह बन्दर फिर आ गया तो।" मम्मी बोली– "इस बार हम पत्थर पहले से ही जमा करके रखेंगे। जैसे ही वह दिखेगा हम तुरन्त उसे पत्थर मारकर भगा देंगे।" "वह अकेला बन्दर शायद अपने दल से बिछुड़ गया है तभी अचानक इधर आ गया। पहले कभी किसी ने हमारे बगीचे को नुकसान नहीं पहुँचाया।" मम्मी और गोलू मिलकर उखड़े हुए पौधों को इकट्ठा करने लगे।

शाम के समय गोलू के दोस्त उसके पास पहुँचे। "चलो गोलू बच्चू माली के बगीचे में फल तोड़ने चलते हैं।" "नहीं आज मैं नहीं आऊँगा।" "क्यों क्या हो गया?" "मेरा शरारत करने का मन नहीं कर रहा। आज हमारे घर में एक बन्दर ने आकर इतना उत्पात मचाया कि मम्मी की सारी मेहनत बेकार चली गई।" "यह देखकर तुम्हें बड़ा दुःख हुआ होगा।"

"बगीचे की हालत देखकर मुझे बच्चू माली का चेहरा याद आ गया। उसे हम कितना तंग करते हैं। वह फिर भी हम पर पत्थर नहीं फेंकता और हमें चुपचाप जाने देता है। सच में वह बहुत भला इनसान है। हमें अपनी गलती की उनसे माफी माँगनी चाहिए।" "यह क्या कह रहे हो? ऐसा करने से शैतानी करने का सारा मजा किरकिरा हो जाएगा।"

"हमें वही शरारत करनी चाहिए जिससे किसी का नुकसान न हो। अपने मजे के लिए हम दूसरों को कितना परेशान करते हैं, इसका एहसास मुझे अब हो रहा है। तुम्हें जाना हो तो जाओ, मैं तुम्हारे साथ नहीं आऊँगा।" "तुम्हारे बगैर हमें मजा नहीं आएगा गोलू। चलो ना हमारे साथ।" "चलूँगा लेकिन शरारत करने नहीं, बच्चू माली से माफी माँगने जिसके बगीचे को हमने इतना नुकसान पहुँचाया है।" गोलू बोला तो सब उसके साथ चुपचाप बगीचे की ओर चल पड़े। वहाँ जाकर सबने बच्चू माली से माफी माँगी तो उसने उन्हें खुशी–खुशी माफ कर दिया। उस दिन के बाद से गोलू और उसके साथियों ने फिर कभी उसके बगीचे को नुकसान नहीं पहुँचाया।

डॉ. कुसुम रानी नैथानी
देहरादून (उत्तराखंड)

पढ़ो और जानो

इन प्रश्नों के उत्तर इसी अंक में हैं, आपको उन्हें ढूँढ़ना है।

1. पी.वी. नरसिम्हा राव कितनी भाषाएँ बोल सकते थे?
2. 'साफ–सुथरे लोगों को सफाई पसन्द होती है।' यह वाक्य किस कहानी का है?
3. पिता की जिम्मेदारी माँ से कैसे अलग है?
4. गुरजीवन ने लुटेरों का मुकाबला कैसे किया ?
5. भारत में कितने राज्य एवं केन्द्र शासित प्रदेश हैं?
6. इस बार 'सम्पादक की पाती' किस विषय से सम्बन्धित है ?
7. 'सत्य की राह' कहानी में नन्दू को क्या नया अनुभव हुआ?
8. नमन ने रिटर्न गिफ्ट में क्या दिया ?
9. किस भारतीय खिलाड़ी ने तीरंदाजी में सर्वाधिक पदक प्राप्त किये हैं?
10. चित्रकथा से आपको क्या नई जानकारी प्राप्त हुई?

उत्तरमाला

दस सवाल : दस जवाब

(1) (अ) वज्रासन (ब) पद्मासन (स) हलासन (द) चक्रासन (2) 21 जून 2015 (3) ऋग्वेद (4) सात (5) बारह (6) महर्षि पतंजलि (7) वज्रासन (8) प्रातःकाल (9) आयुष मंत्रालय (10) पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार

अन्तर ढूँढ़िए

(1) चिड़िया अतिरिक्त (2) सूरज का आकार बड़ा (3) फुटबॉल गायब (4) लड़के की पेंट का रंग अलग (5) हवाई जहाज का आकार छोटा (6) लड़की के बालों का रंग अलग (7) पतंग अतिरिक्त (8) एक फूल का पौधा गायब

दिमागी कसरत

(अ)

9 + 4 + 1 = 14
3 + 5 + 7 = 15
2 + 6 + 8 = 16

(स्तंभ योग: 14, 15, 16)

(ब)

7 x 3 x 2 = 42
4 x 5 x 6 = 120
1 x 8 x 9 = 72

(स्तंभ गुणनफल: 28, 120, 108)

बुद्धि की परख

मुँह ऊँट का, धड़ हिरण का, पूँछ शेर की और पैर हाथी के हैं।

Count and tell the numbers
Ans. - 27

बूझो तो जानें

(1) कोयला (2) सिंदूर (3) मजदूर (4) समोसा (5) बल्ब

वर्ग पहेली

1 ल	2 ता	3 मं	गे	4 श	5 क	6 र	■
■	7 न	ग	■	8 ह	म	द	9 म
10 वि	पु	ल	■	तू	■	11 न	त
12 ना	रा	■	13 सं	त	री	■	वा
श	■	14 ब	ता	■	■	15 त	ला
16 क	17 त	र	न	■	18 घ	ट	■
■	19 म	त	■	म	ना	■	20 धा
21 ल	गा	न	■	22 न	भ	च	र

सुडोकू

1	3	5	6	7	4	9	8	2
4	7	6	8	2	9	5	1	3
2	8	9	5	1	3	7	6	4
6	2	4	1	9	5	8	3	7
8	9	7	2	3	6	1	4	5
3	5	1	7	4	8	6	2	9
5	4	3	9	6	1	2	7	8
9	1	2	4	8	7	3	5	6
7	6	8	3	5	2	4	9	1

रचना सोनी, कक्षा 11, उदयपुर

दृष्टि शर्मा, कक्षा 8, बीकानेर

धानिष्ठा बोहरा, कक्षा 7, उदयपुर

नव्या गुंदेचा, कक्षा 3, वसई

सिद्धा जैन, उम्र 9 वर्ष, जोधपुर

महक प्रज्ञा बोथरा, कक्षा 8, दिल्ली

महाराणा प्रताप

वह निर्भीक और बलशाली था
था जिसमें गजब का स्वाभिमान
देश की खातिर घास की रोटी खाई
न घटने दिया जिसने मिट्टी का मान।

नाम उसका राणा प्रताप था बच्चो
मेवाड़पति और जो चेतक का स्वामी
लम्बी मूँछें, चौड़ा सीना, ऊँचा कद
वीर पुरुष जिसका अश्व था द्रुतगामी।

अकबर को जिसने था ललकारा
राणा ने देशप्रेम सबको सिखलाया
मातृभूमि की ख़ातिर जिसने रण में
लहू को पानी की तरह बहाया।

अद्भुत है जिसकी गाथा बच्चो
है अद्भुत जिसका अरमान
इतिहास में अमर रहेगा युगों–युगों
महावीर महाराणा का नाम।

शुभम पांडेय गगन, अयोध्या (उत्तर प्रदेश)

आप भी अपनी कलम और कूँची का कमाल हमें मोबाइल नं. 9351552651 पर या पत्रिका के पते पर भेजें।

'5 जून : पर्यावरण दिवस'

साथ मिलें, साथ सोचें, रखें नए कदम,
पेड़ लगाकर धरती बचाएँ हम !

सामग्री सौजन्य : आई. आई. एफ़. एल. फाउंडेशन द्वारा
गांवों में संचालित सखियों की बाड़ी केंद्र,
ब्लॉक- चित्तौड़, आबू रोड़, अजमेर, खमनोर एवं गढ़ी।

पूजा, खमनोर

राधा गमेती, खमनोर

सोनू कुमारी, आबू रोड

अर्चना, प्रांजलि, गढ़ी

सीमा गर्ग, चित्तौड़

आशा कुमारी, आबू रोड

सुरभि, आयुषी, साधना, अजमेर

पर्यावरण से है जीवन

पर्यावरण से है जीवन
इसे अपना दौस्त बनाते हैं
चलो चलकर पेड़ लगाते हैं
आओ जाने पेड़ की माया
देते शुद्ध हवा ,
फूल, फल और छाया
आओ अपने दिलों में हम
प्रकृति प्रेम जगाते हैं।
सागर बादल गगन प्रदूषित
नदी, धरा और पवन प्रदूषित
बढ़ गयी प्रदूषण की छाया
सांसों की बढ़ गयी मुश्किल
रुठ गयी प्रकृति
मिलकर उसे मनाते हैं।

कृष्णा, चित्तौड़

पूजा बैरागी, रेखा भील, लक्ष्मी भील चित्तौड़

नन्हा अखबार

देश व दुनिया की खबरें जो आप जानना चाहेंगे

पक्षियों के लिए बनाया सुन्दर आकर्षक घर

गुजरात के नवी सांकली गाँव के अल्पशिक्षित किसान भगवानजी भाई ने पक्षियों के लिए खुद की सूझ-बूझ से 140 फीट लम्बा और 40 फीट ऊँचा पक्षी घर तैयार किया है। इसके लिए उन्होंने लगभग 20 लाख रुपये खर्च किए हैं। इसमें उन्होंने तक़रीबन 2500 छोटे-बड़े मटकों को शिवलिंग आकार के ढाँचे में इस तरह से सजाया है कि कई तरह के पक्षी इसमें अपना घर बना सकें। उनका बनाया यह सुन्दर पक्षी घर उनके छोटे से गाँव की पहचान बन गया है। आज इस पक्षी घर में कबूतर, तोता सहित कई किस्म के पक्षी रहते हैं।

12.9 अरब साल पुराने सितारे की खोज

अमरीकी स्पेस एजेंसी नासा के हबल स्पेस टेलिस्कोप ने विशालकाय और प्राचीन सितारे की खोज की है जो कि करीब 12.9 अरब साल पुराना सितारा माना जा रहा है। यह बिग बैंग के बाद अस्तित्व में आने वाले पहले सितारों में से एक है। जर्मनी में मैक्स प्लैंक इंस्टीट्यूट की टीम ने सितारे से आती बेहद हल्की रोशनी का पता लगाया। वैज्ञानिकों ने सितारे का नाम एरेंडेल रखा है। यह सितारा सूर्य से लाखों गुना ज्यादा चमकदार है।

बिहार में एक साथ लहराए 78 हजार 17 तिरंगे

बिहार के भोजपुर जिले के जगदीशपुर के तत्कालीन राजा व स्वतंत्रता संग्राम के नायक वीर कुंवरसिंह की 164 वीं पुण्यतिथि के अवसर पर केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह की मौजूदगी में एक साथ 78017 तिरंगे लहराए गए। राष्ट्रीय गीत, वन्दे मातरम् पर लगातार पाँच मिनट लहराए गए राष्ट्रीय ध्वजों के साथ ही पाकिस्तान का 18 वर्ष पुराना लाहौर में एक साथ 57,500 पाकिस्तानी झंडे फहराने का रेकॉर्ड टूट गया। कार्यक्रम आजादी के अमृत महोत्सव के तहत आयोजित किया गया

दुनिया की सबसे पतली इमारत

अमेरिका के मैनहैटन में 'स्टेनवे टावर' पूरी तरह से बनकर तैयार हो चुका है। यह टावर दुनिया की सबसे पतली इमारत है। 'स्टेनवे टावर' की ऊँचाई करीब 1,428 फीट है। 84 मंजिला इस टावर को 111 वेस्ट 57 वीं स्ट्रीट के नाम से भी जाना जाता है. इस टावर में 60 अपार्टमेंट शामिल हैं। डेवलपर्स के अनुसार यह 'दुनिया की सबसे पतली गगनचुंबी इमारत' है।

बेजोड़ बसावट : अनूठी गार्डन सिटी

डेनमार्क की राजधानी कोपनहेगन के बाहरी इलाके में बसाई गई अनूठी गार्डन सिटी की विशाल बगीचे में गोलाकार कॉलोनियों की शक्ल में की गई बसावट ने इसे दुनिया के लिए देखने लायक बना दिया है। ब्रोंडबी गार्डन सिटी के घरों में बड़े यार्ड हैं, जो शोरगुल और घनी आबादी वाले शहर से दूर कुदरती सौंदर्य के साथ रहने की अनुभूति प्रदान करते हैं। 1964 में गार्डन सिटी के आइडिया को मंजूरी दी गई थी। ब्रोंडबी की नगरपालिका ने इसके लिए जमीन आवंटित की। ब्रोंडबी हैवी के वास्तुकार ने बहुत सोच समझकर प्रकृति प्रेमियों के लिए इस रिहायशी कॉलोनी का नक्शा तैयार किया। उद्देश्य साफ था, यहाँ रहने वालों के बीच सामाजिक और पर्यावरणीय सम्पर्क बढ़ाना।

भारत ने 73 साल बाद जीता थॉमस कप

भारत ने 15 मई को थॉमस कप (Thomas Cup 2022) बैडमिंटन टूर्नामेंट के फाइनल में 14 बार के चौंपियन इंडोनेशिया को 3–0 से हराकर इतिहास रच दिया है। भारत ने 73 साल में पहली बार बैडमिंटन के इस टूर्नामेंट को जीतने में कामयाबी हासिल की। अब तक इंडोनेशिया, डेनमार्क और मलेशिया जैसी टीमों का इस टूर्नामेंट में दबदबा रहा था।

What's App Story

This is one of the most memorable interview to get admission in UKG.

"What's your name?" "Sita" "Good. Tell me something you know" "I know many things. Tell any rhyme or story which you know." Again,"Which one you want.. Rhyme or Story!" "Ok. Please tell me a story." "Do You want to hear what I studied or what I wrote?" Taken to surprise, she asked "Oh! you write stories?" "Why should I not write?" She was impressed with answer.

"Ok, tell me the story which you have written-?" Sita said "Ravan kidnapped Sita & took her to Srilanka." The opening scene failed to impress but still she encouraged the child to continue. "Rama asked Hanuman's help to rescue Sita. Hanuman too agreed to help Rama." "Then?" "Now, Hanuman called his friend Spider man." "Why?" "Because there are lot of mountains between India and Srilanka.. but if we have Spiderman we can go easily with his rope."

Principal - "But Hanuman can fly isn't it.?" Sita- "Yes. But he is having Sanjeevi Mountain on one hand so he cannot fly very fast.!" All is quiet, after a while Sita asked "Should I continue or not?." "Ok plz continue!"

"Hanuman and Spiderman flew to Srilanka and rescued Sita. Sita said Thanks to both!" "Why" "When you are helped you should say Thanks!" So Sita requested Hanuman to call Hulk..." All were surprised.She realized our curiosity and said " Now Sita is there, so to take her safely back to Rama she called Hulk"

Teacher - "What??? "Hanuman can carry Sita right?" "Yes. But he has Sanjeevani Mountain in one hand and has to hold spider man on the other"

No one could control their smiles. " So when they all started to India they met my friend Akshay! " "How come Akshay there now?" "Because its my story and I can bring any one there!" The principal didn't get angry but waited for the next twist. Then all started to India and landed at Bangalore majestic bus stop! Now I asked,"Why they have landed there? "Because they forgot the way & Hulk got an idea and called Dora!" I came to know about Dora only there.!

"Dora came and she took Sita to malleshwaram 5th cross. that's all!" She finished the story with a smile. The principal asks "Why malleshwaram 5th cross?"

"Because sita lives there & I am Sita!" The principal was impressed and embraced the child. She has been admitted in UKG & was gifted with a Dora doll.

Mia AND CITRIC ACID

- Venu Variath

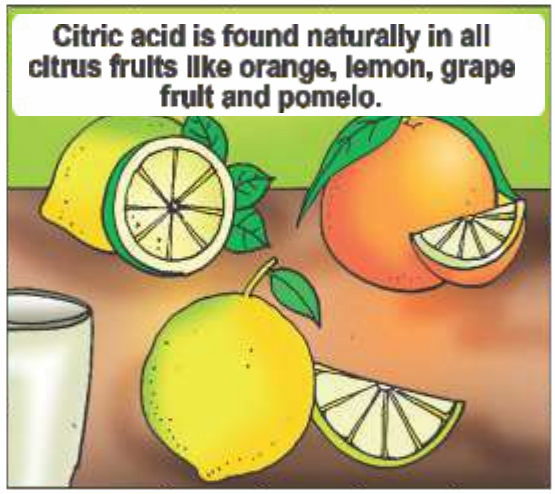

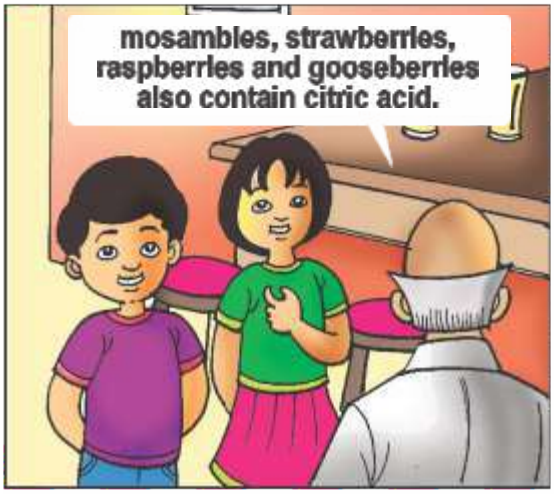

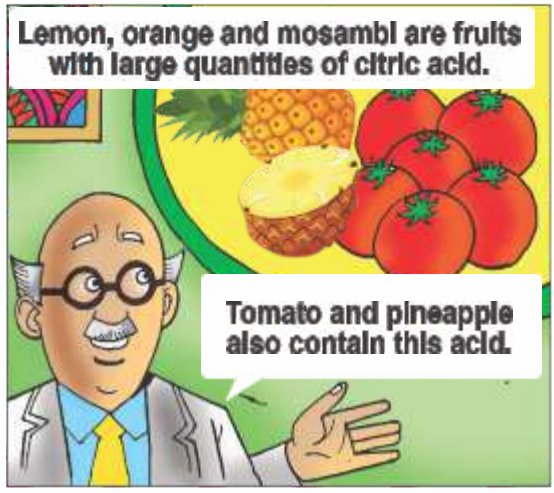

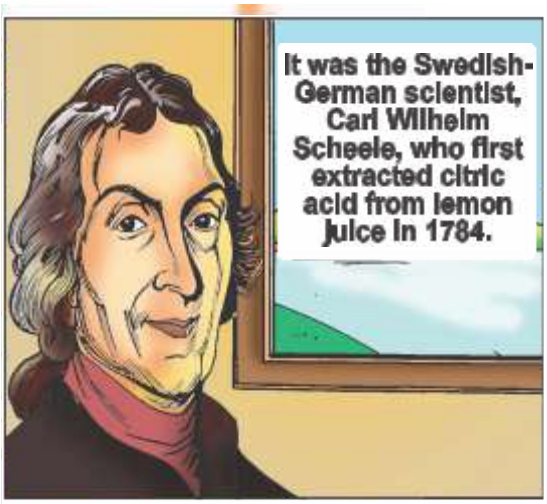
It was the Swedish-German scientist, Carl Wilhelm Scheele, who first extracted citric acid from lemon juice in 1784.

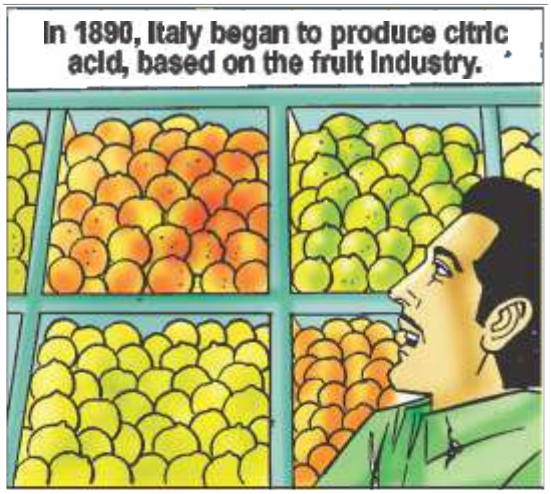
In 1890, Italy began to produce citric acid, based on the fruit industry.

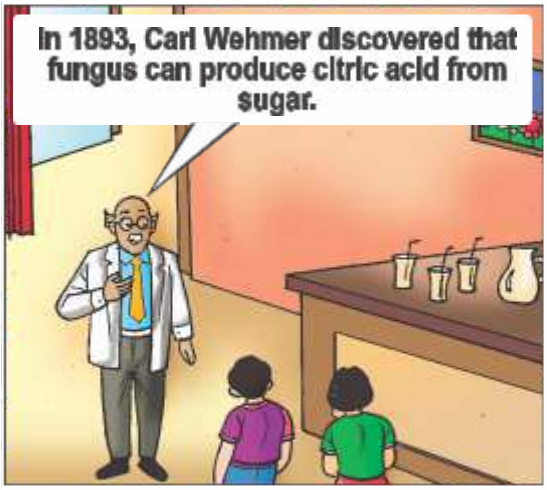
In 1893, Carl Wehmer discovered that fungus can produce citric acid from sugar.

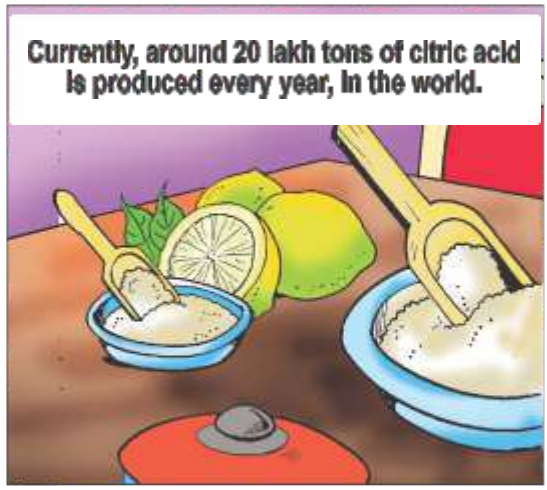
Currently, around 20 lakh tons of citric acid is produced every year, in the world.

It is produced in such large quantities because it is essential for preserving food products without getting spoiled.

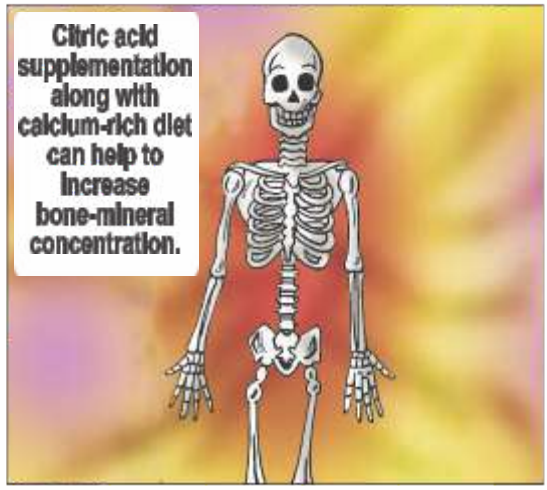
Citric acid supplementation along with calcium-rich diet can help to increase bone-mineral concentration.

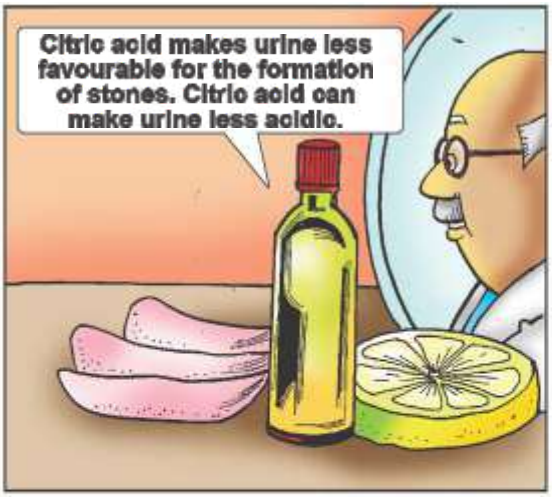
Citric acid makes urine less favourable for the formation of stones. Citric acid can make urine less acidic.

It also helps to maintain the proper functioning of the stomach in a sick person.

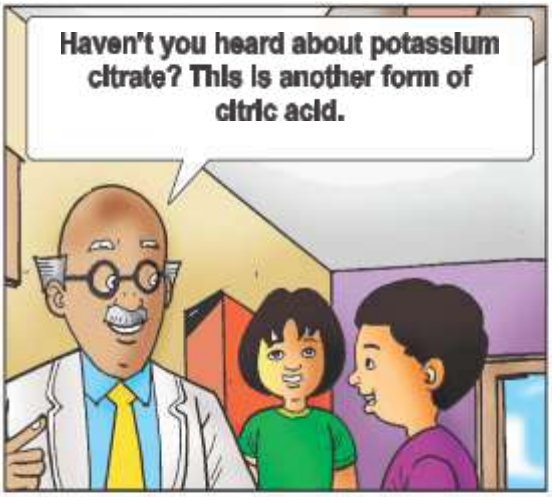
Haven't you heard about potassium citrate? This is another form of citric acid.

Citric acid promotes the growth of the skin. It protects the skin from environmental damage and oxidative stress.

How much citric acid is present in lemons?

One litre lemon juice contains about 48 grams of citric acid.

Picture Crossword

By : Venu Variath

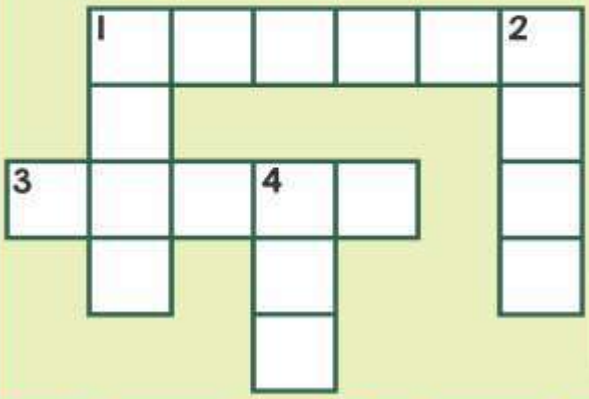

1 (across)

4 (down)

1 (down)

2 (down)

3 (across)

CUT & PASTE

By : Dharampaul Dogra 'Mintu'

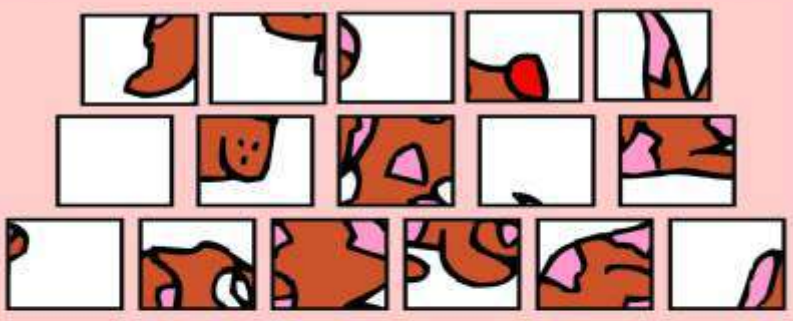

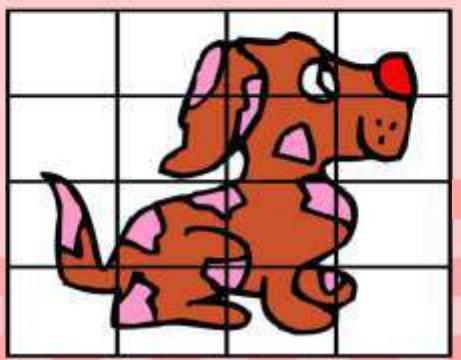

बच्चों का देश द्वारा ऑनलाइन संचालित

बच्चों का क्लब

बाल मन के रंग

आप भी इस क्लब के सदस्य बनना चाहे तो 9414343100 पर अपना नाम, पता, उम्र, कक्षा, रुचि, पत्रिका का सदस्यता क्रमांक आदि विवरण लिखकर व्हाट्सएप मैसेज करें। इसकी सदस्यता निःशुल्क है। सदस्यता के लिए आयु सीमा 7 से 15 वर्ष है।

प्रिशा चौखड़ा, कक्षा 8, थाणे

कीर्ति गोयल, कक्षा 5, सिलीगुड़ी

अर्चित जैन, कक्षा 7, उदयपुर

आराध्या माहेश्वरी, कक्षा 5, हापुड़

अर्चिता तातेड़, कक्षा 7, कोलकाता

ओजस्वी, कक्षा 5, गौरीगंज

अक्षय, कक्षा 8, बीकानेर

छवि राठी, कक्षा 8, निम्बाहेड़ा

जून, 2022

RNI No. 72125/99
Postal Reg. No.: RJ/UD/29-157/2022-24
Posting Date : 27 & 29
Posted at : Kankroli

विश्वनाथ प्रताप सिंह

जन्म : 25 जून, 1931 ■ निधन : 27 नवम्बर, 2008

वी पी सिंह के नाम से प्रसिद्ध विश्वनाथ प्रताप सिंह भारत के आठवें प्रधानमंत्री थे। वे उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री भी रहे। 1957 में उन्होंने भूदान आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभाई थी। सिंह को प्रधानमंत्री के रूप में भारत की पिछड़ी जातियों की भलाई के लिए की गई कोशिशों के लिए याद किया जाता है। वे बहुत सरल स्वभाव के थे और उनकी छवि एक मजबूत व दूरदर्शी व्यक्ति की थी।

बच्चों का देश
राष्ट्रीय बाल मासिक